रुख़सत के पल में

यादें मिटती नहीं
शब्दों में लिखकर किताब बन जाती है

असीम मजुमदार

BlueRose ONE .com
Stories Matter
NewDelhi • London

BLUEROSE PUBLISHERS
India | U.K.

Copyright © Ashim Mazumdar 2026

All rights reserved by author. No part of this publication may be reproduced, stored in a retrieval system or transmitted in any form or by any means, electronic, mechanical, photocopying, recording or otherwise, without the prior permission of the author. Although every precaution has been taken to verify the accuracy of the information contained herein, the publisher assumes no responsibility for any errors or omissions. No liability is assumed for damages that may result from the use of information contained within.

BlueRose Publishers takes no responsibility for any damages, losses, or liabilities that may arise from the use or misuse of the information, products, or services provided in this publication.



For permissions requests or inquiries regarding this publication, please contact:

BLUEROSE PUBLISHERS
www.BlueRoseONE.com
info@bluerosepublishers.com
+91 8882 898 898
+4407342408967

ISBN: 978-93-7825-008-8

Cover Design: Ajay Dhyani
Typesetting: Sagar

First Edition: October 2026

अपने प्रिय का रुख्सत होना या प्रिय से रुख्सत हो जाना जीवन का यथार्थ और एक सुनिश्चित पल भी, बिछड़ना तो तय है जीवंत या मृत्योपरांत ।

सच्चे प्रेम में मिलने और जुदा होने के बीच जो सपनों के आशियाने टूट गये उन रिश्तों की तासीर जहन में कहीं ठहरी होती है और गुजरे हुए पल कभी खुशी और कभी दर्द बनकर हसरतों में सताते है ।

ऐसे ही आत्मीय हालात और भावनात्मक असंख्य पल को मेरी कल्पना ने शब्दों में संजोकर मेरी रचनाओं में प्रस्तुत किया जो खुली हुई और बंद आँखों के समक्ष वास्तविक प्रतीत होंगे ।

प्रेम के अफसाने सभी जिन्दगी के अलग मगर रुख्सत होने का दर्द लगभग एक सा ही होता है और जो हसरते जो ख्याल मन में ताजा होती है उनका एहसास मन को सुकून दे जाता है ।

जो आँखों में ठहरा रहा वही आसूं अपना था
हालात की जद में टूट गया जो वो तो एक सपना था ।
कौन संजोए कौन समाए सोच रहा हूँ बरसो से
टूट गया है दिल में जो वो तो और का सपना था ।
लिखे थे तकदीर में मेरी कैसे इनको ठुकराता
जुल्म मोहब्बत के हर दिन मुझको तो ये सहना था ।
उम्मीद भी उनसे क्या करता वो तो बादल आवारा थे
जिनको सतह समंदर पर रोज जा बरसना था ।।
महरूमी ने छीन लिया कलम का रिश्ता हाथों से
मुझको दिल के पन्नो पर उनका नाम जो लिखना था ।।

उनकी वहशत है कि हम बेवफा न हो
वो फिर से कही तन्हा न हो ।।
हम तो इसलिए नहीं मिलते उनसे
कही पास उनके हिज्र का पैगाम न हो ।।
आंधियों से धोखा खा जाएंगे वो इक दिन
जिन्हें मुड़कर देखने की आदत न हो ।।
गर इश्क ही होती कहीं उनके दिल की दवां
उनको रंज होता कही हम रुख्सत न हो ।।
हैरत है क्यूं इतने वो मेहरबां हुये आज
कि हम रहे पास उनके जिन्दगी में कही जुल्मत न हो ।।

बेवजह ही रुसवा हुये
न हम तुम्हारे हुये न तुम हमारे
गलियों में गुजरना भी मुश्किल हुआ
कहो कहां जाके हम ठहरे

कहते थे ना देख मुझे इस तरहा
जमाने की नजर है नजर पे तुम्हारे
हरीफो ने अब हमारे इश्क में
और बढ़ा दिये हैं पहरे
कहों कहा जाके हम ठहरे

जुल्म की चाक पर इतनी
धंस गयी है दुनियाँ
दीखता नहीं आँखों में इनके
मुहब्बत की तासीर ये गहरे
कहो कहाँ जाके हम ठहरे

सिलसिला रुख्सतों का होगा
फिराक का और भी होगा गम
होंगे प्यार के दुश्मन हजार
बस बदलते ही रहेंगे चेहरे
कहो कहां जाके हम ठहरे

इश्क करने का शौक यहां
हमको कहा था इतना
तेरी शोहरत के वास्ते हमने
कितने ही दाग जिस्म में भरे
कहो कहां जाके हम ठहरे

काश के तुम फिर कहीं मिल पाते
तुम्हारी कसम हम तुम्हारे हो जाते

जमाना हुआ तुम दूर हुये हो जितने
वक्त गुजरता रहा तुम करीब हुये उतने
एक बार मेरे दर्द का तुम सहारा बन पाते
तुम्हारी कसम हम तुम्हारे हो जाते

वक्त हमारे दरमयां इतनी कम हो गई थी
देखते ही देखते मगर शाम ढल गई थी
उसी रोज गर तुम मेरी धड़कनों में समा पाते
तुम्हारी कसम हम तुम्हारे हो जाते

बरसती है आँखे तरसते है इतने
पास आकर तुम मेरे कितने हुए थे अपने
उस रंग में संग मेरे कही तुम भी ढल पाते
तुम्हारी कसम हम तुम्हारे हो जाते

हर चीज जिन्दगी को मुकम्मल नहीं होता
चाहत जहाँ कम हो दिल पर ऐतबार नहही होता
मेरी वफा की राह में एक फूल ही बिछा पाते
तुम्हारी कसम हम तुम्हारे हो जाते

जो मुझे यादो में सताते है
वो सपनों में तो आते है
एक पल सुख पहुँचाते है
जीवन साथी बना जाते है
जो मुझे यादों में सताते है

चाँद सी सुहानी है वो
परियों की रानी है वो
एक नजर जो देखे उन्हें
उनमें वहीं समा जाते है
जो मुझे यादों में सताते है

पंखुड़ी सी कोमल है वो
हिरणी सी चित चंचल है वो
एक बार ख्यालो में आ जाये
सांसों में समा जाते है
जो मुझे यादों में सताते है

जिन्दगी ने दिया है ना जिन्दगी ने लिया है
जख्म जो मिला है दिल को जमाने का दिया है ।।
क्या बताए तुमसे आखिर गर्दिशों की रंजिशे
जहर के साथ हमने यहाँ दर्द भी पीया है ।।
तुम थे न याद थी न साया साथ था
जिन्दगी तन्हाइयों में हमने किस तरह जीया है ।।
क्या गिड़गिड़ाए किसी के आगे हम जाकर
चाक दामन के भला यहाँ किसने सीया है ।।
चलो चलते है असीम उनकी महफिल में
इरादा दिन ने मिलने का फिर आज किया है ।।

राह देख रहा हूँ वादा कब निभाओगे
खाख अगर हो जाएंगे फिर आकर क्या करोगे ।।
क्या बताए आजकल क्या हाल है दर्दे गम का
गर जख्म रहे ना रहे हम मरहम का क्या करोगे ।।
दरींचों के बाहर सभी धुंधली हो रही बहारें
तुमको पहचान ही ना पाऊं अरमानों का क्या करोगे ।।
नजदीक आकर पल्कों में एक शबनम ही दिखा जाते
दम ही निकल जाए दर्दे दिल का क्या करोगे ।।
हर लम्हा सताएंगी जो आंसू संजोये हो आंखों में
जिन्दगी में ही न होंगे हम हसरतों का क्या करोगे ।।

गर दिल में कैद कर लोगे इसकदर
फिर कभी हमें रिहा न कर पाओगे

तेरी आँखों के चिलमन कर रहे इशारे
हमको भी बेकरारी है मिलने को तुम्हारे
पाओगे हमको वही तुम जिधर भी जाओगे
फिर कभी हमें रिहा न कर पाओगे

प्यार करते हो तो फिक्र क्यूँ करते हो
कह दो जमाने से तुम किसी पे मरते हो
हम है दीवाने तुम्हारे हम पर ही जा लुटाओगे
फिर कभी हमें रिहा न कर पाओगे

बहारों में अपनी दीवानगी चाहे इकरार ना करो
अपनी जुबां से मुहब्बत का चाहे इजहार ना करो
जज्बात अपनी आँखों से तुम छिपा ना पाओगे
फिर कभी हमे रिहा न कर पाओगे

अब शुरु हो गई तो खत्म करो ये कहानी
रह न जाये हम दोनों की अधूरी प्रेम कहानी
मेरी बाहों में आकर तुम कभी न धोखा खाओगे
फिर कभी हमें रिहा न कर पाओगे

बलमा आज नहीं आये
बैठी रही मैं पलके बिछाये
बिरह के आँसुओं में डूबी
मैं जुगनू सी जलती रही

शामो सहर बस बीत रहे है
वो बरसो मेरे मीत रहे है
ख्यालो में विरह का
दर्द मैं सहती रही
मैं जुगनू सी जलती रही

प्यार अफसाना बन रहा है
दिल दीवाना बन रहा है
इंतेहा के इस सफर में
वक्त ही गुजरती रही
मैं जुगनू सी जलती रही

आँखों में मीठी सी चुभन है
सीने में हल्की सी जलन है
उनकी राहों में नजरे बिछाये
रात यूँ ही ठलती रही
मैं जुगनू सी जलती रही

पहली नजर जो तुम मुस्कराए एहसास हो गया
मेरी दीवानगी पे तुमको ऐतबार हो गया ।।
रोज की तरहा हमको देख अपनी राहो में
कही रुकने को दिल तेरा बेकरार हो गया ।।
हम तो जी भी लेते कई उम्र तेरे इंतजार में
शुक्र है कि तुमको हमराह मुझसा मिल गया ।।
मैं तो खो गया तेरे हुस्न में मदभरी आँखों में
अच्छा हुआ जो तेरी रेशमी जुल्फो में उलझ गया ।।
तुम क्यूं जागते हो कशमकश में रात भर
मैं तो दिल के करीब हूँ अब तो प्यार हो गया ।।

तुमने
सोचा क्या किस तरहा
मैं विचार असीम हो जाता हूँ
तुम्हारी शोक नजरें
वो गहराईयों में जब
ताकती है मुझको
मुझे नहीं लगता
मैं, मैं हूँ
जब जहाँ में हर नजर
समक्ष ताकता हूँ तुमको
तुम्हारी
दहकती आँखों में जलकर
मौहब्बते चिता का
बुझता खाक रह जाता हूँ
वो शोले
भड़कते है जब
तेरे गम की पनाहो में
जल जाता है कफन भी
इश्के जिन्दगी का
जो पहनाया था तुमने कभी
अब नग्न रहा
मोहब्बत मेरा
ये जीवन तन्हा रह जाता हूँ
मैं विचार
असीम हो जाता हूँ

खामोशियों के बगैर कहीं मैं भी जिंदा होता
मेरी गुरबतों में अगर तू मेरे साथ होता ।।
जख्म भरता ही नहीं तू याद आता है मुझे
क्या करूं अब किसी से प्यार भी नहीं होता ।।
मंजिल को बनाया था मैंने सपनो का खजाना
टूट कर बिखर गया सब सच नहीं होता ।।
दिन डूबता ही है तेरे गम के आंसुओं में
रात भी ढल जाती गर सामने तेरा दामन होता ।।
तुम्हारे साथ ही जीते तेरे साथ ही मर जाते
मुहब्बत का कफन तुमने गर हमको दिया होता ।।
प्यार अपना लुटाकर दगा जो दे गये हो
दौलत ही तो कम थी अबमैं लुटा होता ।।

जो बहारो में बुलाती रही वो आवाज कहा है
गर तुमने भुलाया नहीं फिर वो जीने का अंदाज कहाँ है ।।
मैं तुझे बुनता रहा सुबहो शाम मेरे ख्यालो में
बिन कहे शबे ख्बाब तेरे आने का अंदाज कहाँ है ।।
सुकून मिलता था मुझे तुमसे मिलने का मजा ही और था
अब देखकर मुझको तेरे मुस्कुराने का अंदाज कहाँ है ।।
तुझे सीने से लगाने की तमन्ना दिल में उठी है मगर
मुझे इशारों में पास बुलाने का तेरा वो अंदाज कहाँ है ।।
फिर रहा हूँ आज भी तन्हा उल्फत के ठिकानों पर
अब तेरे छुपकर वहाँ आने का वो मिजाज कहाँ है ।।
तुझे मालूम है मैं नहीं जी सकता हूँ तेरे बगैर
कभी सरगोशियों में मुझको तेरा वो जगाने का अंदाज कहाँ है ।।

तेरे दिल ने कह दिया हमसे जो कहना न था
ऐसे हो गया प्यार तुम्हे हमसे जो होना न था

हम ऐसे दीवाने है हम जिसपे मरते है
दुनिया से नहीं डरते प्यार दिल से करते है
छोड़ के ऐसा साथ हमारा तुमको कही जाना न था
ऐसे हो गया प्यार तुम्हे हमसे जो होना ना था

हम तेरी आशिकी में मशगूल हो गये इतने
नाम तेरा है सांसों में आते है तेरे ही सपने
तुमको इस दीवाने को ऐसे ही खोना न था
ऐसे हो गया प्यार तुम्हे हमसे जो होना ना था

जब से तुम्हे देखा है अपना बना लिया तुमको
ख्यालों से तमन्नाओ में दिल ने बसा लिया तुमको
किसी का दिल तोड़कर तुमको अपना जख्म सीना न था
ऐसे हो गया प्यार तुम्हे हमसे जो होना ना था

जिन्दगी में जख्मों को भी सी लेंगे
तेरी खातिर हम दर्द में जी लेंगे

आँखों से आँसू रिस्ते नहीं है
जख़्म मेरे कोई दिखते नहीं है
छुपाके दिल में सभी
जहर खुद ही पी लेगे
तेरी खातिर हम दर्द में जी लेंगे

हर शाम छलकते पैमानो में
दिल जलता है मैखानो में
सुकून मिलता नहीं दिल को
दिल जलाकर ही जी लेंगे
तेरी खातिर हम दर्द में जी लेंगे

गम है मगर उन्ही का दिया है
प्यार जिनको हमने किया है
जो रिसते है आँखों से मेरी
उन आँसुओं को हम ही पी लेंगे
तेरी खातिर हम दर्द में जी लेंगे

सभी लोग है गैर यहाँ
लगता नहीं कोई अपना है
पाया है जो मैंने तुमसे
एक मन का टूटा सपना है
दर्द मैं अपना किसे कहूँ
सभी का मन टूटा है
इस दुनिया का रोग यही है
मन ही मन से रूठा है
होकर पराया कहे अपना
वही इंसान अपना है
पाया है जो मैंने तुमसे
एक मन का टूटा सपना है
ख्वाबों की इस दुनिया में
रख हौसला ना टूट जरा
किस्मत से ज्यादा वक्त से पहले
क्या मिला किसी से पूछ जरा
जो पाना है वही पाएगा
सागर तो सबका सपना है
पाया है जो मैंने तुमसे
एक मन का टूटा सपना है
इस जीवन में कितना ही
विश्वास जो मन का टूट गया
इंसानियत का इंसानों से
बेवजह ही नाता टूट गया
छोटी सी ये जिन्दगी है
फिर क्या हंसना क्या रोना है
पाया है जो मैंने तुमसे
एक मन का टूटा सपना है

जमाने की बंदिशों में चाहते मिलने को तरसती है
कभी ख्याल आया तन्हाई मुझ पर कैसे गुजरती है ।।
दिल में तुम्हारे उल्फत की शम्मा जलाए फिरता हूँ
हमको मालूम है कजा उम्मीद पर कैसे गुजरती है ।।
कभी खुद को बेवफा बनाकर जिन्दगी में उसने कहा
खुदनुमाई की हर सजा उनके दिल ही से गुजरती है ।।
फासलों का हर दर्द रोज उनकी चाहतो का
सुबहो शाम इक तीर सा दिल में उतरती है ।।
अंदाज नहीं है तुझे उल्फत में नजदीकियों का
तेरे एहसास ही मैं आँसू आँखों में ठहरती है ।।

तमन्ना मेरे दिल की न निभा सके हो
दोस्ती को मुहब्बत न बना सके हो ।।
जो सपने जिन्दगी के सजाये थे हमने
हकीकत तुम उनको न बना सके हो ।।
राह जो तेरी देखता रहा हरदम
हमसफर तुम उसी को न बना सके हो ।।
चाहत में अपनी तुम हाथों से उनके
मांग भी अपना न सजा सके हो ।।
खिली भी जो कलियाँ चाहतों के ख्वाब बनकर
उनको मुहब्बते चमन में न खिला सके हो ।।
रूसवाई के अंधेरों से खुद को बचाकर
कद्र की शम्मा भी न जला सके हो ।।

जलते रहे चांदनी में
तुम याद आये रात भर

रात के जागते पहर
ख्याल मेरे ठहर ठहर
पूछती रही क्यूँ हुये जुदा
रूलाती रही रात भर
जलते रहे चांदनी में
तुम याद आये रात भर

खामोशियाँ भी थी गवाह
तन्हाईयाँ भी थी गवाह
तुझे पाने की बेकरारी थी
तरसते रहे हम किस कदर
जलते रहे चाँदनी में
तुम याद आये रात भर

जिस्म हमारे करीब तो नहीं
फिर दिल से क्यूं पास है हम
किस तरहा जीएंगे तेरे बिन
तड़पते है हर मोड़ हर डगर
जलते रहे चाँदनी में
तुम याद आये रात भर

मुझमें तुम्हारी है कमी
तू जो ख्यालों में आ थमी
मुश्किलों में शाम गुजरी
रात आँसू बहा रही है

तेरे सिवा न कोई कड़ी थी
जिन्दगी भी सुहानी घड़ी थी
कांटों में गुजर रही है
मुश्किलों में शाम गुजरी
रात आँसू बहा रही है

तेरे साये में बहार आती थी
दिल को चैन मिल जाती थी
तेरे बगैर जिन्दगी कही थमी है
मुश्किलों में शाम गुजरी
रात आँसू बहा रही है

यादो में अनगिन तेरी शरारते
आँखों में प्यार की बाते
हसरतों में सता रही है
मुश्किलों में शाम गुजरी
रात आँसू बहा रही है

कभी समंदर के किनारे बैठो
देखना
कितना सुकून देता है
गर्म सर्द हवाओं में
बलखाती नाचती भवरें
आवाज करती हुई
कभी ठराती हुई सी
वो लहरें
जब साहिल के किनारों पर आकर
बिल्कुल शांत हो जाती है
देखना
कितना सुकून देता है
ऐसे ही परेशान करती
कितनी ही वक्त की लहरें
इंसानियत को
झकझोर देने वाली
अदृश्य, अनदेखी, अनसुनी आवाजें
जीवन में
इन्हीं लहरों की तरहा
जब मेरे करीब आकर
शांत हो जाएगी इक दिन
ये सोचकर जिन्दगी
जीने का जूनून देता है
कभी समंदर के किनारे बैठो
देखना
कितना सुकून देता है

उम्र ही गुजर गई इंतेजार में तुम्हारे
दिल में तो रहते हो तुम ख्यालों में हो हमारे ।।
दर्द अब रुकता नहीं जिस्म में कही भी
खून ही आँसू बने है आँख में हमारे ।।
रिश्ते ही उजड़ गये जमाने की रंजिशों में
जुदा पहले हो गये हम मिलने से हमारे ।।
गर हौसला कहीं हमको मिलता कोई तुम्हारा
पलके बिछाए रहता मैं राह में तुम्हारे ।।
फासले तो बहुत है मगर अपने ही लगते हो
रात दिन रहते हो तुम निगाहो में हमारे ।।

उनकी खुदनुमाई मुहब्बत समझकर आँखों से धोखा खा गया
मगर इश्क की हकीकत अब हमको नजर आ गया ।।
दूर रहने का वादा करके फिर चलने लगे साथ हमारे
मेरे चाहत की तासीर हमको फिर से नजर आ गया ।।
हर रोज हम देखते रहे ऐसी नजरो से उन्हें
जैसे अपने जख्म का कोई मरहम नजर आ गया ।।
खून से खत लिखकर बयां करते थे मुहब्बत बेपनाह
नतीजा कम से कम उनको मुझमें दिलदार नजर आ गया ।।
अपनी दिल पसंद पर हमको ऐतबार तो नहीं था
मगर हमारी आँखों में उनको हुस्न का कदरदान नजर आ गया ।।

तसव्वुर में रहता हूँ मैंने तुझे भुलाया नहीं
जमाने के दायरों में
जब ढूंढते थे अपनी मंजिल
हर बार करीब आकर
टूटते थे हमारे ही दिल
यही जख्म प्यार का
आज भी भरा नहीं
तसव्वुर में रहता हूँ मैंने तुझे भुलाया नहीं

सपनों को बुलाते थे हम रातों में
धूप में छाव खोजती थी नजरें
तेरी राह तकते तकते
नैन थकते नहीं ये हमारे
बरसते रहे आँखों से बादल
लेकिन कभी तू आया नहीं
तसव्वुर में रहता हूँ मैंने तुझे भुलाया नहीं

मुस्कान तेरी इक दवा है
जो जिन्दगी देती है मुझको
तेरी हसरते आज भी
तेरा आशिक बनाती है मुझको
तुमने मेरी धड़कनो को
कभी भी सताया नहीं
तसव्वुर में रहता हूँ मैंने तुझे भुलाया नहीं

तुम्हारे प्यार में जख्म ऐसी है खायी

मैं तुम्हारी राह में साथ चल रही थी
अनबुझे प्यार के बंधनों में बंध रही थी
फिर भी क्यूं, तुमने की मुझसे बेवफाई
तुम्हारे प्यार में जख्म ऐसी है खायी

लहरें बोहत थी जीवन के सफर में
कश्ति हमारी आ, गई किस डगर में
हमारी खुशी जमाने को रास ही न आयी
तुम्हारे प्यार में जख्म ऐसी है खायी

सपने जो देखे थे साथ तुम्हारे
रह गये वो सारे हसरतो में हमारे
हद है ये प्यार की तुझे भूल भी न पायी
तुम्हारे प्यार में जख्म ऐसी है खायी

कौन हो तुम ख्यालो में
तुम सुमन हो या गगन हो
या शीतल पवन कोई
तुझमें साकार है
कोयल की बोलो में
सावन के झूलों में
प्रकृति एक कविता सी
तुझमें साकार है
इंद्रधनुशी रंगों में
तेरे सनिग्ध अंगों में
जीवन एक मुस्कान सी
तुझमें साकार है
पंखुड़ी कोई फूलों सी
लाली तेरे होठो की
तुम चंदन या पलाश हो
या कोई एहसास हो
कौन हो तुम
तुम सुमन हो या गगन हो
या शीतल पवन कोई
तुझमें साकार है

सुकून जिसने जिन्दगी का जिन्दगी से मिटा दिया
हसरते उस गुमशुदा को फिर करीब लायी है ।।
जिन लम्हो के बगैर हम कभी रहते थे बैचेन यहा
अरमान उसी वक्त का फिर दिल में जगाई है ।।
कहानी उल्फत की खत्म हुई थी जिनसे
एक नया ख्याल मेरे दिल में उनको खींच लायी है ।।
दर्द जो ठहरा हुआ था आँखों में अभी तक
दामन में आँसुओं के फिर बहार लायी है ।।
फूल तेरे खतो के जवां है आज भी
दिल के दराजों से उनकी महक आयी है ।।

एहसास है तुम्हे उल्फत का ऐतबार नहीं करते हो तुम
खुद अपना दिल तोड़कर किससे वफा करते हो तुम ।।
खुश्बू तुम्हारी महकती है फिजाओ में कुछ लम्हा ही
पास आते हो पल भर मेरे फिर कही खो जाते हो तुम ।।
धड़कनों में हमारी होती है बड़ी हलचल
जब कभी ख्यालों से गुम हो जाते हो तुम ।।
रोज मेरी रातो में आते हो बनके सपना
बड़ी देर से आते हो थोड़ी देर में चले जाते हो तुम ।।
जुल्म तो किया तुमने मगर सुकून मिलता है मुझे
मेरे दर्दे जिगर की दवा जो बन जाते हो तुम ।।

जिस दिन से जुदा हम तुम हुये
जिन्दगी में कभी बहार नहीं आयी
रोये भी थे कभी अपने जख्मों पर
दर्द जो भुला दे ऐसी कोई दवां नहीं आयी

तुम्हारे गम में ज्यादा ही परेशां हूँ
बरसो बाद लगा तुझे मेरी याद आयी
ढूंढते भी किस तरहा हम तुझे
जमाने से जो तूने अच्छी निभाई
दर्द जो भुला दे ऐसी कोई दवां नहीं आयी

मुहब्बत का अंजाम ये तो नहीं था
जो चेहरे पर तेरे शिकन भी न आयी
उल्फत का पल उम्मीदों में गुजारे थे मैंने
ना तुमने मुझे जाना ना मेरी हो पायी
दर्द जो भुला दे ऐसी कोई दवां नहीं आयी

हम तो लुट चुके थे उल्फत में
बरबाद हो गये तेरी चाहत में
गर नक्स था मुझमें तुमको मनाना न आया
छोड़ दिया बीच राहों में मिलने भी न आयी
दर्द जो भुला दे ऐसी कोई दवां नहीं आयी

तुम्हारे आँखों की झील में मुझको है डूब जाना
प्यार जो करते है तुमसे हमें इतना है कहना

मन की आशा में बांधकर तुझे ले जाऊं
चाहत में अपने जीवन का कमल खिलाऊं
खुशियों के हर रंगों में तुमको है सजाना
प्यार जो करते है तुमसे हमें इतना है कहना

वक्त के मंजर में तुम कही डूब न जाना
सागर है कितना गहरा तुमने अभी न जाना
कश्ति अपने प्यार की तुमसे है पार लगाना
प्यार जो करते है तुमसे हमें इतना है कहना

दिल में मुहब्बत का ऐसा अरमान जगाओ
प्यार जिसे करते हो उसमें ही खो जाओ
खुदनुमाई नहीं मुहब्बत जग को है दिखाना
प्यार जो करते है तुमसे हमें इतना है कहना

करता रहेगा हर सितम जमाना ये हर बार
उल्फत में डूबे रहे लेकर जीवन की पतवार
मुश्किल राहो में अपना वजूद है बचाना
प्यार जो करते है तुमसे हमें इतना है कहना

फूल बनके खिला हूँ गुलशन में तुम्हारे
तुम मुझे शाख के कांटों से बचा लो

सर्द है कुछ दर्द मेरे छलके है आँखों से
शबनमी इस बूंद को तुम पलको में सजा लो

फिजांए कह रही है बहार चली जाएंगी
मुरझा न जाऊं कहीं मुझे सीने से लगा लो

जमाने की नजर है जमाने से उल्फत में
ना जाने कल क्या हो मुझको दिल में बसा लो

ये पंखुडियाँ नहीं हसरते है तेरे प्यार की
बिखर न जाऊं कही मुझे किताबों में छुपा लो

तुम मुझे शाख के कांटों से बचा लो

शनासाई मुहब्बत की छुपाकर क्या तूने पा लिया
हमें आब से जीना है हमने दीवाना खुद को बना लिया ।
दिल में सुकून पाने का सलीका किया इजाद हमने
तुझसे मुहब्बत करना ही अपना मुकाम बना लिया ।।
ऐतबार मेरे दिल को उल्फत में है इस कदर
कब आओगे बता दो मैंने तुमको अपना बना लिया ।।
प्यार में तुम्हारे जीने की बात ही और है
साथ तेरे मरने का इरादा मैंने बना लिया ।।
वफा की राहों में कहां आबाद होते है सभी
मैंने जिन्दगी जीने का सबब ही तुम्हे बना लिया ।।

वो हमसे जुदा हुये सबब ही बताया नहीं
कह गया चलते चलते मिलेंगे फिर कभी नहीं ।।
छोड़ना ही था अगर फितरत में तुम्हारे
रुख्सत ही रहते मुझसे पास ही आते नहीं ।।
जरूरत किसी हमराह की मुझे भी थी मगर
अच्छा हुआ जो कम से कम तू मुझे मिला नहीं ।।
ऐसे साथ से तो बेहतर है अकेलापन
अच्छा हुआ जो हमको अभी दूसरा कोई मिला नहीं ।
मिलते तो बोहत है मंजिल की राह में
मिली है नजरे मगर नजर तुमसा कही मिला नहीं ।।

फिर आये हो याद मुझे
लेकर प्यार का बीता जनम
तेरी आदत सी हो गयी
ये जिन्दगी जी लेंगे हम

एक आशियां कोई प्यार का
ढूंढते रहे हम हर कदम
लब सिले होते थे
बाते आँखों से किया करते थे हम
तेरी आदत सी हो गयी
ये जिन्दगी जी लेंगे हम

रात ढलती थी संग तेरे
दिन गुजरते नहीं थे मेरे
हर शाम कही किसी डगर
जब रोज ही मिलते थे हम
तेरी आदत सी हो गयी
ये जिन्दगी जी लेंगे हम

जमाने का था क्या कुसूर
तकदीर को ही नहीं था मंजूर
कितने ही फंसाने बने
तुमको ही ना पा सके हम
तेरी आदत सी हो गयी
ये जिन्दगी जी लेंगे हम

दीवाना बन गया हूँ जानम तेरे प्यार में
एक बार तो कह दो प्यार करते हो
मेरे नाम का तुम भी दम भरते हो

उल्फत की जिन्दगी बुरी नहीं
आशिक मेरे जैसा कही नहीं
ख्वाब ऐसा तुम भी देखते हो
मेरे नाम का तुम भी दम भरते हो

जिन्दगी इस तरहा नहीं कटेगी राहों में
हर तरफ हरीफों के हम है निगाहों में
थाम लो हाथ मेरा गर मुझसे प्यार करते हो
मेरे नाम का तुम भी दम भरते हो

मोहब्बत में जिन्दगी से जुदा हो जाएंगे
एक दूजे के लिये हम कही खो जाएंगे
जिद ना करो दिल में तुम ही रहते हो
मेरे नाम का तुम भी दम भरते हो

तू कविता की है सादगी
गजल की रूह है
नजम सा हकीकत तू
नाजुक सा ख्याल
सोच रहा हूँ इस पल
क्या है तुझमें कमी
चांद सितारे भी है कम
जन्नत की तू है जमीं
हूर तू कायनात की
चेहरा तेरा जमाल
नज्म सा हकीकत तू
नाजुक सा ख्याल
सागर की बलखाती
लहरों की तू रागिनी
साहिल में आन मिलती
सेहरा की तू संगिनी
खामोश आकर रेत पर
मिलना तेरा कमाल
नज्म सा हकीकत तू
नाजुक सा ख्याल
लहराती नाचती झरनों की
मीठी सी आवाज तू
वादियों में रहती सुनहरी
धूप का आभास तू
रहती हरपल करीब मेरे
तू मुहब्बत की मिसाल
नज्म सा हकीकत तू
नाजुक सा ख्याल

हसरते भी जरूरी है इक एहसास के लिये
भूल नहीं सकता तुझे दम भर के लिये ।।
उम्मीद की एक शम्मा दिल में जलाये बैठा हूँ
बस एक तेरी उल्फत में जलने के लिये ।।
ख्वाहिशे जमाने से दफन हो गई जिगर में
इक रोज तेरी याद में खाक होने के लिये ।।
रहता है शामो सहर तसव्वुर बस तुम्हारा
शब ए तन्हाई में एक पल तुझे पाने के लिये ।।
मेरे शौक को तुम इस कदर भी हवा न दो
नजर धुंधली हो गई मगर जीते है एक नजर के लिये ।।

इत्तेफाकन जो तूने मुझे जुदा कर दिया
जिन्दगी में जीना मेरा खुशहाल कर दिया ।।
मुश्किल था गुजरना मेरा जिन गलियों में
हर तरफ चलना मेरा आसान कर दिया ।।
तुम्हारी बंदिशों से मै अभी निकला ही हूँ
जिन्दगी ने दुशवार में जीना इंकार कर दिया ।।
मिला भी मुझे तोहफा हरजाई तुमसे इस कदर
एक तेरे कैद से मुझे रिहा कर दिया ।।
जिस खेल को अभी प्यार समझ रहा था मैं
करम तेरे ऐतबार का जिन्दगी बहार कर दिया ।।
जिन्दगी में चैन इतना खो दिया था हमने
अब सुकून में जीना दिन रात कर दिया ।।
जिनके प्यार में अब तक तुम उलझ रहे हो असीम
तकदीर ही उनको भुलाने का फैसला सुना दिया ।।

बिन तेरे हर बात ने जीना दुश्वार कर दिया
जीया तेरे बिन जीया तो क्या जीया

जीते रहे हम जिस जहाँ के वास्ते
कहां खो गये वो प्यार के रास्ते
तकदीर ने ऐसे क्यूं हमें तड़पा दिया
जीया तेरे बिन जीया तो क्या जीया

याद आती है मुझे तेरी हर आशिकी
देखकर तेरे चेहरे में तेरी हर खुशी
छोड़कर तन्हा मुझे ये, तूने क्या किया
जीया तेरे बिन जीया तो क्या जीया

हवां का हर झौंका छू रही है मुझे
तेरे उल्झी लटो में उल्झा रही है मुझे
कह रही है बहारो में संग तेरे हूँ मैं पिया
जीया तेरा बिन जीया तो क्या जीया

तुम ख्यालों से अभी गुजरे हो
दिल में कुछ राहत सी आ गयी

मैं खुद में तुमको ढूंढ रहा हूँ
तुम्हें पाकर आंखे मूंद रहा हूँ
तुम रूह में मेरे समा गयी
दिल में कुछ राहत सी आ गयी

दिन बीता तेरे तसव्वुर में सारा
रात हमने साथ तेरे गुजारा
ख्वाब में तुम चांद बनके जो आ गयी
दिल में कुछ राहत सी आ गयी

तेरी खुश्बू सी है बहारों में
जिधर भी चल पड़ा मैं राहों में
ख्यालों में तुम साथ आ गयी
दिल में कुछ राहत सी आ गयी

प्यार जो तूने मुझको दिया था
वही प्यार मैं आज लौटा रहा हूँ
राहे वफा में बदनाम होकर
तेरी जिन्दगी से चला जा रहा हूँ

मोहब्बत ऐसी जो तूने हमसे निभाई
तकदीर में हमको बस मिली बेवफाई
गम के समंदर में खुद को डुबोकर
सारी खुशियाँ मैं तुझपे लुटा जा रहा हूँ

मुझको वफा का सिला जो मिला
इसमें तुम्हारी खुशी और मेरा गम है
जालिम ये दुनिया छोड़ जाने से पहले
दुनियाँ मैं अपनी जला जा रहा हूँ ।

तमन्ना है मेरी सदा खुश रहो तुम
सलामत रहो गम न कोई सहो तुम
तुम्हारी ही खातिर मुहब्बत में सारे
दामन में आंसू लिये जा रहा हूँ

राहे वफा में बदनाम होकर
तेरी जिन्दगी से चला जा रहा हूँ

तुमको सीने से लगा के रोया न गया
जख्मो को आंसुओं से धोया न गया ।।
रहते हो तुम दिल के कितने आसपास
एहसास है तुम्हारा मगर पाया न गया ।
सीने में रखकर तुम्हें ख्वाब ही देखते रहे
किस जहाँ में मिलोगे तुमसे बताया न गया ।
दिल की यही तमन्ना फिर रह न जाये अधूरी
खुशियों का एक पल भी साथ बिताया न गया ।।
चाहत की हर तस्वीर अब चुभती है सीने में
उल्फत का रंग जिन्दगी में कभी लाया न गया ।।

मुश्किल है कभी तुमसे मिलना भी इक पल के लिये
तू याद बनकर मुस्तकिल रह जाएगा जिन्दगी के लिये ।।
दिल ने कहा तुमको बना लूं मैं अपना
मेरी तमन्ना यही रह जाएगी अधूरी उम्र भर के लिये ।।
वक्त ने तेरी तस्वीर ऐसी इस दिल में बनायी है
जीस्त में हर मोड़ पर एहसास तेरा पाने के लिये ।।
मुहब्बत में जख्म जो मिला तेरी बेवफाई से
दे गया दर्द उम्र भर तेरे प्यार में जलने के लिये ।।
ये जिन्दगी भी कट जाये अगर तुम्हारे बिन तुम्हारे लिए
ख्वाहिशे रह जाएंगी मेरी ख्वाहिशों के लिये ।।

तेरी उल्फत ने मुझको दी ऐसी सजा
मेरी बेकरारी ही बन गई मेरे दिल की रजा

रात हमने ख्वाब में देखा है तुमको चमन में
बहारो में भी खुश्बू हम दोनों थे प्यार के मगन में
एहसास तुझे पाने का मुझको आता है मजा
मेरी बेकरारी ही बन गई मेरे दिल की रजा

हर लम्हा कुछ कहता तू साथ मेरे जो रहता
भीड़ में तन्हाई में तू मुझसे ये कहता
तेरे प्यार के इकरार में मुझे आता है मजा
मेरी बेकरारी ही बन गई मेरे दिल की रजा

सुबहो की इतनी किरणों में जब आज मैंने तुम्हें देखा
मेरी चाहत ने बदली है मेरे जीवन की रेखां
संग जीने में तुम्हारे मुझे आता है मजा
मेरी बेकरारी ही बन गई मेरे दिल की रजा

तू ही मेरा अरमान
जीवन को अनबुझी चाहत तू
मेरे प्यार से अंजान
तू ही मेरा अरमान

मेरे जिस्म की रूह है तू
क्यूँ मगर नादान है तू
मेरे बेजुबान मोहब्बत का
इक तू ही बयान
तू ही मेरा अरमान

तू बलखाती मेरे अंग में
रक्त का है प्रवाह
तू ही मेरी जिन्दगी है
तू ही मेरी जान
तू ही मेरा अरमान

तू धरती वायु गगन सा
तू जल मुझमें अगन सा
जीवन की मंजिल भी है तू
मुक्ति का आव्हान
तू ही मेरा अरमान

भोर की पहली किरण
सांझ की अंतिम छटा
तेरी यादो में पला
बिलकुल अकेला मैं
मेरे हृदय की तुम कृत्रिम छवि हो
पल भर देखू तुम्हें
मन की है आशा
कल्पना तुम हो
तुम जो दूर हुये
सब कुछ छिन सा गया
मेरी वेदना बादलों से होती हुई
आकाश के किसी छोर से
सूखे तन पर जैसे
यादों के बदलते मौसम में
एकाकी जीवन साथ तुम हो
तेरी खुशी
आत्मीयता, करुणा मेरे मन में
तेरी खामोशी
मधुबन की शुष्ख हवाओ में
तेरी हंसी
लहरों के कलरव में
तेरी खुश्बू
सुमन बगियन में
तेरा आगमन
मैंने देखा है
पतझड़ के सरसराते पत्तों में
तुम हो

साथ चलने की जिद है मुझे इकरार करता हूँ
मैं मुद्दतों से तुझे बेपनाह प्यार करता हूँ ।।
हमको रस्में निकाह का यही सलीका कुबूल है
दो गुलाब हो हाथों में शम्मा का लिहाज करता हूँ ।।
इंतेहा हो गई अब तन्हाई का हर सितम
रूस्वाईयों का डर नहीं मुझे बस फिक्र तुम्हारी करता हूँ ।।
मेरे हर फरियाद में तमन्ना बस तुम्ही हो
संग जीने की बात हो ख्याल तुम्हारा करता हूँ ।।
मोहब्बत रखना दिल में नफरत ही न हो कहीं
इंसान कम है जमाने में इंसानियत की बात करता हूँ ।।

बेवफा न बन सका दीवाना बनके रह गया
गर्दिशों में प्यार मेरा फसाना बनके रह गया ।।
दिल का कोई भी जख्म आँखों से छुपता नहीं
दर्द तेरी जुदाई का तंजओं मजा बन के रह गया ।।
उनके चेहरे पे दर्द का कोई शिकन भी नहीं देखा
ये मुहब्बत मेरी जिन्दगी का कफन बनके रह गया ।।
उम्मीदो के मरहम पर हम इसकदर जीते रहे
वो दगा देता रहा इश्क इंतेहा बन के रह गया ।।
वक्त बड़ी मुश्किलों से इंतेजार में ही कट गयी
दिन रात तसव्वुर मेरा हमसफर बनके रह गया ।।

तुम्हें पाने का कोई हुआ क्या इशारा
फिर ख्वाब में मुझे तुम्ही ने पुकारा

जुदा होके तड़पते है हम ही अकेले
प्यार की डगर में कोई खुद को कैसे सम्हाले
जख्म भी नहीं भरा और मिलता नहीं किनारा
फिर ख्वाब में मुझे तुम्ही ने पुकारा

तुम्हें क्या मालूम हम कितना तड़पते है
हसरतों में तेरी सुबहो शाम मरते है
मौत ही आती नहीं करती नहीं इशारा
फिर ख्वाब में मुझे तुम्ही ने पुकारा

जी नहीं सकता हूँ इस तरह दूर रहकर
जख्म गहरे होते है और जब देखता हूँ तुझे मुड़कर
वफा की राह में क्यूं मिलता नहीं कोई सहारा
फिर ख्वाब में मुझे तुम्ही ने पुकारा

तुम न मिलते तो जिन्दगी क्या होती
दिन दिन ना होता रात रात ना होती

तेरे इंतेजार में न राहो में पलके बिछाता
लाख तारो के बीच नहीं तू चाँद होती
दिन दिन ना होता रात रात न होती

गुल्जार होती चारो दिशा न महकते ये फूल सभी
न फूलों में शबनम होते न जीने की आस होती
दिन दिन ना होता रात रात ना होती

तेरा साथ मिला जो किया मैंने हासिल तुझे
वरना कोई हंसी न लबों पे मुस्कान होती
दिन दिन ना होता रात रात ना होती

रूठ के हमसे तुम मत जाना
ये जीवन है तुमको सुलझाना
बीच भंवर में नाव है मेरी
तुमको है उस पार लगाना
तुम हो प्रतिक्षा जीवन की
तुमको पाना है जीवन पाना
खता अगर हो कोई मुझसे
आकर तुम ही मुझको समझाना
कल्पना के उजले रंगों में
हमको तुम कही भूल ना जाना
जब खिले है प्रेम के पुष्प दिलो में
जीवन भी है साथ निभाना

एहसास मुझे ये हो गया बेवफा अब तू हो गया
जहर जो तूने पिलाई मरने का मजा आ गया ।
कर लिया फरियाद मैंने तू मुश्किलों से महफूज रहे
इतना ही कौन करे तेरा कर्ज अदा हो गया ।।
रहबर बना ना कोई और बना हमसफर मेरा
तेरी हसरतों में जो लिखा वही गजल हो गया ।।
मरने की खबर मिले न मिले मेरा ख्याल मिटा देना
जो नाम है मुझसे तेरा समझना के फना हो गया ।।
ये बात और है कि तू हमसे वफा न कर सका
दोनों ही जुदा हो गये किसी का क्या ही गया ।।

जिन्दगी तुम रोज मुझसे ऐसे रुख्सत हो जाते हो
जुदा है फिर भी ख्यालो में हकीकत जो बन जाते हो ।।
ख्वाब भी तड़पाते है हमको कभी बख्शा नहीं
बड़ी देर से आते हो कुछ देर में चले जाते हो ।।
आता नहीं क्यूं मजा हमको यूं सताने में
हमें जलाकर जो तुम अपना दिल जलाते हो ।।
ये बात और है कि एक दूसरे के नहीं हम
हम दिल में है तुम्हारे तुम दिल में मेरे रहते हो ।।
दम जो भरते हो रोज हमारा ही नाम लेकर
कह सको तो कह दो फिर हमसे क्यूं छुपाते हो ।।

जिन्दगी का कोई पल तेरे सिवा कुछ नहीं
एक तुम्हारी याद है और साथ तुम हो

लाख दर्द ही सहे
फिर भी हमको तू ना मिला
तकदीर में थी जुदाई
जाने वक्त को था क्या गिला
महसूस ये हुआ दिल के पास तुम हो
एक तुम्हारी याद है और साथ तुम हो

आँखों में बरसात है
कटती नहीं कोई रात है
जागते रहते है हम
तू जो नहीं साथ है
महसूस ये हुआ दिल के पास तुम हो
एक तुम्हारी याद है और साथ तुम हो

ये उम्र कैसे काटेंगे हम
तुम कर दो मुझ पे कुछ रहम
साथ तेरे जी लेंगे
जुदा रह सकेंगे न हम
महसूस ये हुआ दिल के पास तुम हो
एक तुम्हारी याद है और साथ तुम हो

खत वो हमने जला दिये
जो तुमने दिये थे
सोलहवे साल में
ना जाने किस हाल मे
अपने वफा को राह में
खत वो हमने जला दिये

रोता है अब दिल मेरा
क्यूं मैने ऐसा किया
जमाने का डर नहीं या आगर
ये जहर मैंने क्यूं पीया
चाहत के रास्तों में
जख्म हमने भी सीये थे
खत जो तुमने दिये थे

आता है सामने चेहरा तेरा
बंद आँखों से जो देखता हूँ तुझे
सुहाने थे वो दिन कितने
प्यार करता था जो तू मुझे
जमाने से छुप छुप कर भी
कदम जो तूने लिये थे
खत जो तुमने दिये थे

कितना नशा था उन नजारों में
जब मिलते थे हम बहारों में
छा जाती थी मदहोशी चारो तरफ
तेरी आँखों के इशारों में
छुपाकर जमाने से प्यार अपना
इजहार जो पन्नो में तून किये थे
खत जो तुमने दिये थे

चांद सितारो से पूछो
कितना प्यार है तुमसे
निशोथ में बेहाल जो हुआ
मैं क्षम्य हूँ
तुम तक पहुँचने के लिये
कंटकाकीर्ण पथों से
चला आया हुआ
हस्ती हूँ मैं
तुम दुति हो, स्निग्ध हो
तुम
बहुतो की हो
प्रियदर्शिनी
मुसाओ जो रहा बरसों से
तुम
आजन्म स्मरणीय असीम
सर्वव्यापी
तुम हो
मेरे साथ

आकर तेरे आशियाने में होश हमने खो दिया
आँखों से पिलाकर तूने मदहोश जो कर दिया ।।
अब उम्र बीत जायेगी तुम्हारे मैखाने में
जिस्म में प्यार का इक जहर जो तूने भर दिया
कैसी ये दुश्मनी हमसे निभायी है तुमने
रोज मेरे घर जाने का रास्ता ही बदल दिया ।।
पीते रहे रात भर जलते ही रहे हम
हरीफो ने तेरे नाम से बदनाम हमे जो कर दिया ।।
हर वक्त सोचता हूँ नहीं आऊँगा तेरी महफिल में
मगर तेरा खुलूस मुझमें क्या असर कर दिया ।।

महफिल में हम पर इस तरहा जो तू मेहरवाँ होने लगी
हमसे तुम्हारी नजदीकियां सबकी आँखों में खलने लगी
नूर तेरा कुछ इस तरहा दिल पर मेरे छा गया
सुबहो शाम तुम्ही तुम ख्यालों में आने लगी ।।
तेरे हुस्न का शबाब यूं मेरी आँखों में ठहरा
जिस रोज से मेरे कदम तेरी बज्म में जाने लगी ।।
जिस रोज मैंने पीया है जाम तेरी आंखों से
मदहोश ये जिन्दगी तेरे नाम से तबाह होने लगी ।।

तेरी मुहब्बत मे डूब तो गये हम
मुझे तेरे दिल का आशियाना न मिला

लहरे सभी जाकर साहिल में समा गयी
हमने ढूंढा तो किनारा ही ना मिला
मुझे तेरे दिल का आशियाना न मिला

जो बनाए ये घर दिल ही में उजड़ गये
हो गये बरबाद हम कोई सहारा ही न मिला
मुझे तेरे दिल का आशियाना न मिला

एक तेरे उल्फत की ही चाह थी हमको
ढूंढा बोहत तुझे मगर तू दोबारा न मिला
मुझे तेरे दिल का आशियाना न मिला

दिल में जो बात है

उन सुर्खियों में तुम हो
जो राज है दिल में मुहब्बत की
उन हाले बयां में तुम हो

लगता है मन कही पिघल गया
प्यार का कमल फिर खिल गया
मेरे प्यार के इस सागर के
भंवर में तुम हो
उन हालें बयां में तुम हो

वो हवाएं सुकून देती है मुझे
जिन राहो में पाती है तुझे
तुम एहसास मेरा हर सांसों में
धड़कनों में तुम हो
उन हाले बयां में तुम हो

लहराती मुस्कान सी लगती हो
महकती फूलो सी लगती हो
ये तेरे बदन की खुश्बू है
या फिजाओ में तुम हो
उन हालें बयां में तुम हो

कैसी है ये दास्तां ये कैसा इंतकाम है
रहते है एक दूसरे में कहने को अंजान है ।।
जमाने के दायरों में रहना नहीं है वजह
हम मिल नहीं सकते इसलिये हैरान है ।।
दिल के फैसले सुनो पहुँचो अपने मुकाम पर
बन जाओ मेरे हमसफर जमाना अभी नादान है ।।
अपनी उल्फत जियां करके जालिमो को इत्तेला दो
ये चीज नहीं है बुरी कोई करें हमें बदनाम है ।।
जमाने से कह दो कोई करे ना परेशां हमें
हमको भी है हक मोहब्बत हम भी तो इंसान है ।।

किस जहां में मिलोगे आस लगाये बैठा हूँ
कब से तुम्हारी राह में पलके बिछाए बैठा हूँ ।।
जो लम्हे गुजारे है उल्फत में साथ हमने
तन्हा उन हसरतो को साथ जीये बैठा हूँ ।।
तुझे हर वक्त करीब पाने की चाहत में
जमाने की रूसवाईयों से होश गवाएं बैठा हूँ ।।
आज तुझे ख्वाब में पाने की तमन्ना है
कल जो नही आये सुबहो तक नींद उड़ाए बैठा हूँ ।।
न भुला सका हूँ ना गवां सकता हूँ तुमको
ये कैसी दीवानगी है जो दिल लगाए बैठा हूँ ।।

मैं प्यासी, तेरे प्रेम की
रह ना सकूं तेरे बिना

तुम्हारी जोगन बनी
मन भी तुमको दिया
तुमको ही गुनगुनाती रही
सांसों में हो तुम पिया
माथे पर बिंदियां लगाई
हाथों में हिना
रह न सकूं तेरे बिना

सखी हूँ तेरी सदा
राह तुम्हारे आऊं
एहसास ये देना मुझे
जब पुकारूं तुझे पाऊं
माथे पर बिदियाँ लगाई
हाथो में हिना
रह न सकूं तेरे बिना

जब से मेरा यौवन खिला
तेरे प्रेम में ये मन जला
हर तरफ बस देखूं तुझे
जीऊं मैं कैसे भला
माथे पर बिदियाँ लगाई
हाथो में हिना
रह न सकूं तेरे बिना

जिन्दगी जीया जाये न इस तरहा
कहीं ऐसा न हो
ना तुम आ सको
ना मैं मिल सकूं
फिर जीयेंगे किस तरहा

वक्त के दिये तूफान में ऐसे
क्यूं दामन हम अपना उजाड़ते रहे
सागर में है लहरे इतनी
हम क्यूं भंवर में कश्ति डुबोते रहे
मुझे जीना है साथ तेरे
फिर जीयेंगे किस तरहा

जो घटाये बह रही है हवां में
तो ठहरती नहीं किसी आसमां में
खुश्बू जो महकाये जीवन को
वो गुल खिलाते नहीं क्यूं मेरे चमन में
मुझे महकना है तेरे संग
फिर जीयेंगे किस तरहा

मुहब्बत को हमने जीया है ऐसे
एक दूसरे के दिल में रहते है जैसे
सहमी हुई है अपनी दुनियां
हो पंछी कोई पिजरें मैं जैसे
मुझे उड़ना है तेरे संग
फिर जियेंगे किस तरहा

तुम शामिल नहीं हो
मैने
आमंत्रित किया है
सभी दुख दर्दों को
उनका
स्वयं भागीदार हूँ
न जाने क्यूं
मन
उदास सा रहता है
दर्द छलकता तो है
आँखों में
अब रोने में भी
पहले सा मजा नहीं आता
अच्छा है
क्रम आगे न बढ़ पाया
हम
पास होकर भी
विवश थे
दूर जाने को
समय को मौन जी लूंगा
तुम्हे
मन से भुलाने में
निष्फल हुई कोशिश मेरी
तुम शामिल नहीं हो

रहमते खुदा हो नूर सलामत ही रहे
तुम खुश रहो जिन्दगी तुम्हें हंसाती रहे ।
ख्वाबों की दुनियां में बंदिशें न रखना कोई
मैं गीत तेरे गाऊँ हर साज तुझे गुनगुनाती रहे ।।
महफूज ही रखना मेरा आशियाना अपने दामन में
कि तेरी जुल्फों के साये में मुहब्बत मेरी पलती रहे ।।
मुलाकातों का सिलसिला तुम न करना कम कभी
उल्फत में दायरें न हो जिन्दगी ऐसी चलती रहे ।।
इश्क रहे मुहब्बत हो कयामत हो प्यार में
तेरे नाम से मर जाऊँ दिल में ऐसी दीवानगी रहे ।।

रास्ते जुदा हो गये मंजिल हमको न मिला कहीं
हमराह तो मिले बोहत हमसफर तुमसा मिला नहीं ।।
जख्म गहरे होने लगे धड़कने ही बढ़ती रही
बिन कहे जो लुट जाये वो प्यार तुमसा मिला नहीं ।।
सहता रहा हूँ वो सितम जो जमाने ने मुझको दिया
दर्द जो भुला दे वो मरहम तुझसा मिला नहीं ।।
मिलती रही आँखों से आँखों जमाने में कई
दीवानगी को जो चाहिये वो नजर तुझसा मिला नहीं ।।
ढूंढ़ता रहा तुझे शहर शहर हर मोहल्ले गली गली
दरवाजे सभी खुलते रहे कोई तबस्सुम तुझसा मिला नहीं ।।

हर जनम मैं डूबी रही इंतेजार में इस तरहा
तुम आँखों में रहो मैं करती रहूंगी तुमसे प्यार

खो जाऊंगी इस तरहा तेरे रंगो में डूब जाऊंगी
रास नहीं आएगी मुझको जब तक तुझे न पाऊँगी
तू आएगा सपनो में आज बनके मेरा राजकुमार
तुम आखों में रहो मैं करती रहूंगी तुमसे प्यार

आयी है बसंत नयी चाहत में उमंग छायी रे
खिले है फूल प्रेम के खुश्बूओं में तुम समायी रे
मेरा जीवन है सूना तुम बिन न आयेगी बहार
तुम आँखों में रहो मैं करती रहूंगी तुमसे प्यार

अनजाने से मौके में कह गयी मुझसे पवन
तुम आये हो जिन्दगी में बनके मेरा चमन
मुझको तुम्हारी ही लगन है करती हूँ इकरार
तुम आँखों में रहो मैं करती रहूंगी तुमसे प्यार

इन आँखों में जिन्दगी देखता हूँ
हर सुबह तुझे हर शाम देखता हूँ

मुझे जीने की आस है इस झील में तुम्हारे
यही राह है जीवन की मुझे पल पल पुकारे
उल्फत की लिखी हुई किताब देखता हूँ
हर सुबह तुझे हर शाम देखता हूँ

पलको के बीच पड़ा मेरा ये आशियाना
छुप जाऊँगा मैं वहीं ना देखेगा ये जमाना
हर पल खुशनुमा जिन्दगानी देखता हूँ
हर सुबह तुझे हर शाम देखता हूँ

शबनमी सी ठंड है तारे है आसमां पर
तू चांद बनके उतरी है दिल के जमीन पर
मैं तेरी चांदनी में अपना प्यार देखता हूँ
हर सुबह तुझे हर शाम देखता हूँ

हमारे बीच
किसी दीवार के उदास होने से
मेरी
पीड़ा में कोई फर्क नहीं पडेगा
मैं
सारी सीमाओं को लांघकर
तुम्हारे समीप
तुम्हारी प्रतिक्षा में
समाहित हो जाऊंगा
मेरे प्रतिक्षण के
आंसुओं में
कोई हंसी है
वो तुम हो
मैं तुम्हे
भूल नहीं पा रहा हूँ
मेरे मकान के स्वरूप में
मैं
सिर्फ तुम्हे ही देखता हूँ
तुम्हें ही पाता हूँ
तुम्हें ही आंकता हूँ
हर आलिंगन में
छू जाता हूँ तुम्हें
बोहत करीब से
भूल जाता हूँ
पल भर के लिये
अपनी व्यथा को
तुम्हारे स्पर्श से

दर्द इतना दे गया वो हमको बोहत सताएगी
जख्म जो मिला हमको रह रह कर जलाएगी ।।
फासलो में हसरते ही एहसास बनके रह गयी
मुहब्बत की तासीर हमारी हमको ही लड़पाएगी ।।
ख्वाब जिसका देखता हूँ उसी ने चैन चुरा लिया
समझा था जिसे अपना इक दिन नसीब बनकर आयेगी ।।
मुझको क्या खबर थी जिसे दिल से प्यार करता हूँ
तकदीर की अनबुझी एक प्यास बनकर रह जाएगी ।।
दिल लगाना तुम वहीं जो राह तुम्हारे साथ हो
प्यार करना उसी से जो उम्र भर निभाएगी ।।

जिन्दगी को हंसकर गुजारो जो लम्हा तुम्हे मिल गया
मुद्दतों के बाद सही प्यार का आशियाना तो मिल गया ।।
दिल में कांटे चुभोते रहे हम यही था इंतेहा हमारा
अब कोई गम न होगा हमको सहारा तो मिल गया ।।
कितनी ही रंजिशों में उम्र सारी गुजर गई
शुक्र है हमे फिर भी किनारा तो मिल गया ।
चाहत का असर ये होगा अंदाज ही नहीं था
तुम रूबरू जो हुए हमसे दम हमारा निकल गया ।।
करता हूँ फरियाद यही हम जनम तू साथ रहे
जिन्दगी फिर संग जीएंगे तू मुझे जो मिल गया ।।

हसरतो में जिन्दगी यूँ ही जी रहा हूँ मैं
धड़कने हमारी है और सांसों में तुम हो

तन्हाईयाँ तो नहीं पर ख्यालों के मंजर में
हर हंसी चेहरे में मुझको लगता है तुम हो
धड़कने हमारी है और सांसों में तुम हो

बहती है पवन तेरी खुश्बू का एहसास देकर
गुजरती है छूकर मुझे लगता है करीब तुम हो
धड़कने हमारी है और सांसों में तुम हो

उल्फत के सरहदो पर वफा ही किया हमने
होगे इकदिन हमारे ही हमसफर मेरे तुम हो
धड़कने हमारी है और सांसों में तुम हो

कमसिन तेरी अल्फाजो ने
मुझको अपना बना लिया

मत पूछ क्या हालात है
दिन कटती है न रात है
तुम्हारी कुछ जज्बातो ने
दीवाना मुझे बना दिया
मुझको अपना बना लिया

आस्मां में उड़ रहा हूँ
सपनो से जुड़ रहा हूँ
तुम खुद को कहकर मंजिल मेरी
अरमान दिल मैं जगा दिया
मुझको अपना बना लिया

अफसाने भी कई बनेंगे
दिल जमाने के भी जलेंगे
हमराह तूने बनाकर मुझे
प्यार अपना दिखा दिया
मुझको अपना बना लिया

सूक्ष्म व गहन
जीवन के गर्त में
उनका प्रवाह
कब क्यूँ और कैसे
उनका गमन
कौन जानता है
एक शोक संगीत एक गीत एक नृत्य
मेरे
हृदय की प्रतिफल व्याकुलता
स्वयं प्रतिति
मेरी आत्मीयता मेरा प्रयत्न
व्यर्थ
मुझको अंधकार में ढकेलती
मेरे भीतर एक स्वर
उनकी दृष्टि उनका आवरण
उनका आकार
उनकी अनुभूती उनका स्पर्श
मुझको
मौन सुनने वाला कोई नहीं
मुझे ज्ञात है
उनका
मुक्त होना
निश्चय ही व्यर्थ होगा
मेरा जीवन

मोहब्बत में बेवफा हो जाना जिनकी फितरत है
उसे गुनगुनाने की अदा तेरी खूबसूरत है ।।
जिन्दगी गुजार दी तुमने जिसके गम में
उनको दिल में छुपाने की अदा तेरी खूबसूरत है ।।
खुद पर जुल्म ढाने का दर्द भरा ये शौक नया
छुपकर आँसू बहाने की अदा तेरी खूबसूरत है ।।
बहारो में फिजाओ में मुहब्बत की राहों में
किसी के ख्यालों में मुस्कुराने की अदा तेरी खूबसूरत है ।।
जिसकी मुसकान में तेरी तमन्नाओ के फूल खिलते है
कम्बख्त उनको जलाने की अदा तेरी खूबसूरत है ।।

एहसास तुम्हारा दिल में मेरे यूँ गहरे है
तुमने पुकारा नहीं मगर राह तेरे हम ठहरे है ।।
गम के आंसुओं में तुम भी डूब जाओगे
हमें मालूम है तुम्हारे जख्म कितने गहरे है ।।
साथ चलने का ख्वाब दिखाते हो हमें
राहो में सोचा नहीं कितने प्यार के पहरे है ।।
कहते हो हमारे बगैर वक्त ही कटता नहीं
तुम्हें क्या मालूम तन्हाई हमने कैसे गुजारे है ।।
मंजिल का रास्ता कोई मिलता ही नहीं हमको
डूब रही है कश्ति मेरी बीच भंवर हम ठहरे है ।।

हमको तेरी उल्फत में जिन्दगी जीना है सनम
मेरी तन्हाई को आज मेरा हमसफर मिला

तुम आये हो तो बाहर आयी
संग अपने फूलों की महकती बहार लायी
मन को लगा है जैसे प्यार मेरा खिला
मेरी तन्हाई को आज मेरा हमसफर मिला

तुम ही हकीकत मेरे जीवन का ख्वाब हो
मेरी अनबुझी चाहतों की तुम पहली किताब हो
जिन्दगी मिल गई मुझे जबसे तू मिला
मेरी तन्हाई को आज मेरा हमसफर मिला

मेरे अरमानो की सजा तुम मुझे दे दो
दिल के आशियाने में इक जगह मुझे दे दो
हो सकूं न रिहा कभी चाहे हो कोई गिला
मेरी तन्हाई को आज मेरा हमसफर मिला

मेरी ख्वाहिशों में
इक चाहत सा तुम बनके
साथ रहना मेरे
फासलो में तुम्हारी कमी
दर्द बनके ही सही
जब तक है सांसे
दिल में रहना मेरे

दिल भरता नहीं है याद करके तुझे
सांसे कहती है सीने में भर लू तुझे
तेरी पनाहो से दूर रह सकता नहीं
ना सुकून है धड़कनों को मेरे
जब तक है सांसे दिल में रहना मेरे

तेरी सादगी में छुपी है चाहत मेरी
आ रंग दू तुझे तू मन्नत मेरी
कर दे आकर दुनिया आबाद तू
मर न जाऊं मैं बिन तेरे
जब तक है सांसे दिल में रहना मेरे

मेरे दिल को चैन मिल जाएगा
गर तुमसे ये चमन खिल जाएगा
कसमे जो खाई है साथ जीने की
सपनो को कर हकीकत मेरे
जब तक है सांसे दिल में रहना मेरे

शीर्ष पाने की जो राह
मैने चुनी
मैं अकेला नहीं
लेकिन मैं कोई
नया रास्ता तोड़ना नहीं चाहता
न ही पुराने रास्ते को
मेरा अनुभव भले ही भिन्न
उनका पहुँचना मुश्किल है
मुझे ज्ञात है
लेकिन मैं अपने आप को
एक ही कमरे में सिकोड़ूंगा नहीं
स्वपनों का अनुभव
आने जाने को मैं समाप्त कर दूंगा
सिर्फ उनका रुपांतरण होगा
मेरा शेष
जहां मैं सोता हूँ वही उठता हूँ
बदल रहा है मेरा जीवन
हर रोज
मेरा स्वरुप मेरा आकार
बदलेगा भी क्यूं
बदलूँगा मैं स्वयं
क्योंकि आवश्यक है
मनुष्य का
पुनर्जन्म

कुछ जिन्दगी दी आपने कुछ मैंने उधार लिया
इस तरहा तुझको दिल में बसाकर जिन्दगी मैंने गुजार दिया ।।
प्रेम के उन फूलों को दिल पर रखते है आज हम
उल्फत के पहले खत में जो आपने हमको दिया ।।
ये बात हमको रोकती है तुमसे मिलने के लिये
किस तरहा लौटाये अभी जो प्यार तुमने हमको दिया ।।
हालात ने तन्हाई में हमको इतना मजबूर कर दिया
तेरी चाहतों ने तेरे बिना संग तेरे जीना सिखा दिया ।।
पास नहीं हो फिर भी कभी भुला नहीं पाया तुझे
रूख्सत का गम इस कदर दिल में तुझे बसा दिया ।।

यही बाते हैं जो दिल से हमे जलाती
जैसे मैं तड़पता हूँ तुम नहीं तड़पती ।।
जब से हुये हो रौशन तुम जिन्दगी में
रात ढलती है मगर आँखे नहीं सोती ।।
करीब होकर भी तुम हमारे न हुये
सुकून नहीं मिलता तुम जो साथ नहीं होती ।।
गर यकीं न होता हमको तुम्हारी उल्फत में
जो लगी है दिल में वो आग ही न होती ।।
जिन्दगी तो बहाना है तुम्हारी मुहब्बत में
दम ही निकल गया होता ये बेकरारी न होती ।।

बिन तेरे बरस रहे है मेरे नैन सजना
उड़ गयी है निंदिया मेरी
खो गए रे मेरे चैन सजना
बिन तेरे बरस रहे है मेरे नैन सजना

वक्त का एक तीर ऐसे
मन में लगा है शूल जैसे
दर्द में है हर रैन सजना
बिन तेरे बरस रहे है मेरे नैन सजना

लगने लगा सब ही पराया
मेरे पास नहीं मेरा ही साया
तन्हाई ले रही मेरा सुख चैन सजना
बिन तेरे बरस रहे है मेरे नैन सजना

गम के गहरे तासीर में
तुम खुद को करो न शामिल
करूं तो वफा करूं कैसे
सोच रही बेचैन सजना
बिन तेरे बरस रहे है मेरे नैन सजना

हर पल तेरी कमी लगने लगी
ये जिन्दगी कही थमी लगने लगी
जाने किस तरह है ये फासले
अब जीना ही बेवजह लगने लगी

कभी मिलने को मैं तरसा था इक दिन
तेरे दीदार को बैठा था इक दिन
ऐसे बरस रहा था सावन
इंतेजार में तेरे भीग रहा था तन मन
अब बरसात भी अधूरी लगने लगी
ये जिन्दगी कही थमी लगने लगी

बहारों में फूल खिल जाते
जब हम तुम कही मिल पाते
शहनाईयाँ बजती थी मन में
तरंगों सी उठती थी तन में
अब हर राह अधूरी लगने लगी
ये जिन्दगी कही थमी लगने लगी

तेरे आने की आहटें सुनता हूँ
जब यादों में तुझको बुनता हूँ
जिन्दगी अब उल्झनों में खो गई
जुदा अपने ख्वाबों से हो गई
अब ख्याल भी अधूरी लगने लगी
ये जिन्दगी कही थमी लगने लगी

मेरे अमंद नेह को
जिस उमा ने
ढापा है
मैं दग्ध उर की बैन
जरब अधरो पर लिये
उनके इजाद में
कोई आसार नहीं मेरे समझ
पीड़ित मेरे हृदय सा
फिर भी कोई है
मौन
जिसका हो नहीं सकता था
मैं कभी
विश्वास नहीं होता
अपनी आँखों पर
मुझसे भूलता नहीं
जब मेरा अंग अंग
स्वाद स्वाद होता था
उन्हें देखकर
हर समय हर पल
जिस नजर को
आतुर होता था मैं
मैं नहीं जानता
आकार
जो बने है मिटे है
जीवन का
कोई प्रारम्भ है न अंत
एक छोटे से हिस्से तक सीमित
फर्क सिर्फ उनकी आँखों का

पिछले जन्म और इस जन्म में
समय का अंतराल
अनेक बार
सृष्टि के बनने और मिटने का
मेरी
संवेदनाओं की
स्मृतियों का संग्रह
स्मरण है
मैं ही वो रूप
अति प्राचीन
जैसे क्षण भर में
वर्षों का लम्बा सपना
समय का बोध
मैं नहीं जानता था
इतना अदभुत
इतना कठिन
सिर्फ
एक जन्म
उनकी
एक दृष्टि
मेरी
अंतिम आशा

तेरी आदत से मुझे अक्सर कमी महसूस होती है
तेरी खुश्बुओं से दिल के चमन महकते है ।।
तेरी मुस्कान जब उतरती है आँखो में
हम जिन्दगी के सारे गम भुला जाते है ।।
हमारी कश्ति उल्झनों में इस कदर उलझ गयी
मझधार में नाखुदा जैसे तूफान में उलझते है ।।
हर पल ख्यालों में तस्वीर तुम बन गये
तेरे एहसास में रात दिन हम तेरे तसव्वुर में रहते है ।।
उल्फत के सफर में जो दिया तूने हमको असीम
उन हसरतो में और ज्यादा आँख नम होते है ।।

दिल में मुझे बसाना सवाल है तेरे मन का
हमसफर तुझे बनाना ख्याल है मेरे मन का ।।
रिश्ते जो बिखर गये रूसवाईयों में हमारे
तुझे शोहरत से अपनालूं ख्याल है मेरे मन का ।।
अधूरी न बन जाये आशिकी बिन तुम्हारे
तुझे आँखों में सजा लू ख्याल है मेरे मन का ।।
थम न जाये कहीं सांसे ही हमारी
तुझे धड़कनों में बसा लू ख्याल है मेरे मन का ।।
रौशन हो जाये सब अंधेरे रास्ते और
तू जिन्दगी में आये ख्याल है मेरे मन का ।।

तुम आये तो जिन्दगी जीस्त सी लगने लगी
अंधेरे आशियानों में रौशनी सी लगने लगी

तासीर गहरे प्यार की रंग लायी है अभी
महसूस हुआ ये मुझे तुम आये हो तभी
साँसों में खोई हुई पवन कोई महकने लगी
अंधेरे आशियानो में...

रात में तन्हाईयों के तीर कभी चुभते रहे
मजबूर थे हम रूख्सतों के दर्द सभी सहते रहे
तुम जो आ गये करीब जख्म सभी भरने लगी
अंधेरे आशियानो में.....

पास थे तो वक्त से पाने का नहीं था गम
दूर हुये तो प्यार को तड़पने लगे है हम
अब आये तो जिन्दगी उम्र भी चुराने लगी
अंधेरे आशियानो में ...

फासलो का गम कभी हमको सोने नहीं दिया
हसरतो में उल्फत ने तुमको खोने नहीं दिया
पाया तुझे तो जिन्दगी ख्वाब सी लगने लगी
अंधेरे आशियानों में....

वक्त भी अंजान होकर किये थे कितने सितम
उम्मीद का सहारा न था जिन्दगी में छाये थे गम
तुम हो तो साथ जिन्दगी जुनून सी लगने लगी
अंधेरे आशियानो में.....

मैं जमीं हूँ
तुम हो आस्मा
तुमको पाना है
तुम हो मेरे अरमां

जवां दिल की ये आस है
तू मेरे लिये बोहत खास है
प्यार के पहले सावन में
बना लू तुझे अपना
तुम हो मेरा अरमां

दूर से तुम लुभाते हो
मुझे इतना क्यूं सताते हो
आ तेरी मुस्कान मैं
कर लू मेरे अंगना
तुम हो मेरा अरमा

हद से गुजरना है
तुमको बाहो में भरना है
आ दिल में बसाकर तुझको
पहना दू जीवन का कंघना
तुम हो मेरा अरमां

कल जमाने की पुरानी
एक किताब ढूंढ रहा था मैं
घर के पुराने सामान में
दबी पड़ी थी दीवान में
कुछ जीवंत यादे लिये
कुछ अनकही बाते लिये
पन्नों के भीतर मिली
सकुचाई सी
गुलाब की पंखुडियों में लिपटी
मुझसे कहने लगी
तुम मुझे भूल सकते हो
मगर भुला नहीं पाओगे
मुझसे दूर रह सकतो हो
मगर गवां नहीं पाओगे
तुम मेरा वजूद
कभी मिटा नहीं पाओगे
सच यही है
जमाने बदल जाएंगे
मगर रिश्ते नहीं बदलते
फूल तो खिलते है
मगर कुछ रोज नहीं खिलते
जो मन में बसते है
वो साक्षात नहीं मिलते
यही कुछ यादे
बटोर रहा था मैं
कल जमाने की पुरानी
एक किताब ढूंढ रहा था मैं

मैं उनको हमेशा पास रखता हूँ
अपने जज्बातों में साथ रखता हूँ
रिश्ते जलाये नहीं जाते
मिट्टी में दबाएं नहीं जाते
हर रिश्तों की कहानी रखता हूँ
उस पर माँ की
एक निशानी रखता हूँ
माँ सांसों में रहती है
मेरे रक्त में बहती है
माँ मेरा प्यार है
वो मेरा अंहकार है
इस दुनिया से जाऊंगा
फिर तेरे ही गर्भ में आऊँगा
कल माँ तेरी बरसी है
अपने वजूद की वही
तस्वीर ढूंढ रहा था मैं
कल जमाने की पुरानी
एक किताब ढूंढ रहा था मैं

ये दर्द ही दिल का तुमको करीब ला रही है
जुदा होकर भी तेरे होने का एहसास दिला रही है ।।
अकेले हुये है ऐसे दिल लगता नहीं कही भी
तन्हाई हर एक लम्हा तुमको बुला रही है ।।
ख्याल मुहब्बत का हकीकत बन जाये कहीं
जिन्दगी सुबहो शाम तमुको तलाश रही है ।।
रौशन थी ये दुनियाँ जब हम दोनों थे साथ साथ
जिन्दगी अब भीड़ में भी तन्हा नजर आ रही है ।।
बदनसीब है वो जिसका प्यार ना बुझ पाया कभी
दीवानगी की शम्मा जिसके दिल को जला रही है ।।
दिन कटते है बा मुश्किल कटती नहीं रात है
इतने जख्मों के बावजूद वफा उनको निभा रही है ।।

मरहम जो तेरे प्यार के जख्मों पे भर गए
जीने के सभी रास्ते आसान हो गए ।।
रूठना तो लाजिमी है कोई गिला नहीं था तुम्हारा
जब हमने तुम्हे मनाया तुम अजीज हो गए ।।
आये हो जबसे तुम बनके मुहाफिज मेरे
हासिल जिन्दगी में हर मुकाम हो गए ।।
खुद से ना करना तुम हमको जुदा कभी
गुम हुए रिश्तो जो हमको मुनासिब हो गए ।।
उनकी तहजीब मेरी आँखों को इतनी भा गई
हम झांके बिना ही दिल में उनके कुरबान हो गए ।।

कबसे पड़ी हूँ बनके मैं दुल्हन तेरी
ले जाओ आकर तुम अपने प्रीत को

दिल में मेरे चलते है कटार से
करती हूँ ख्याल तुम्हारा जब कहीं प्यार से
वो सुबहो शाम अब ढल गई कहां
देखा नहीं कब से जिन्दगी को
ले जाओ आकर तुम अपने प्रीत को

बरस रहे है आँखों से धारे
धुल गये पलको के काजल थे सारे
जल रही तेरी उल्फत में हर पल
तड़प रही बस तेरी पनाह को
ले जाओ आकर तुम अपने प्रीत को

जिन्दगी से नहीं थी कोई तमन्ना
दिल में था बस हमराह तेरा बन्ना
सांसे रुकी है इक बार तुझे पाने को
कैसे समझाऊं ये बात मैं जमाने को
ले जाओ आकर तुम अपने प्रीत को

एक रात मांग रहा हूँ
दिल के जज्बात मांग रहा हूँ
कुछ पल रहूँ साथ तुम्हारे
ऐसी हालात मांग रहा हूँ

वफा की राहों में उल्झने कम नहीं होगी
मुश्किलों के भंवर में एक राह मांग रहा हूँ
एक रात मांग रहा हूँ

ये वादा है मेरा फिर न चाहूँगा तुझे
तुझे दिल में सजाकर जीने की राह मांग रहा हूँ
एक रात मांग रहा हूँ

एहसास है मुझे तुझमें अरमान है प्यार का
तू ही मेरी मंजिल रहे इक जुनून मांग रहा हूँ
एक रात मांग रहा हूँ

जमाने की नजरो से दूर एक आशियां बनाऊंगा
जहां मर सकू साथ तेरे वो कायनात मांग रहा हूँ
एक रात मांग रहा हूँ ।

कुछ दिनों पहले एक घटना हुई
घटना क्या थी एक दुर्घटना हुई
मैं अपने शहर जा रहा था
ट्रेन के सफर का आनंद उठा रहा था
सखा सहेलियो को याद करते करते
मन ही मन बोहत इठला रहा था
अकस्मात ही ट्रेन प्लेटफार्म पर आ गई
मैंने जैसे ही धरती पर लैंड किया
श्वेत वस्त्रों में सजी
एक बाला ने मुझे स्टैंड किया
अपना भरोसा दुरुस्त करने के बाद
कुछ देर तक मुझे घूरते रहने के बाद
कहने लगी क्या तुम मुझे पहचानते हो
मैंने कहा क्या तुम वाकई मुझे जानते हो
कहने लगी मैं तो वहीं हूं
जो तुम्हें बोहत भाती हूँ
अब तुम मुझे क्यों पहचानोगे
जानकर भी नहीं जानोगे
उम्र के साथ झुर्रियाँ पड़ गई
और मेरे चेहरे की चमक उजड़ गई
और तुमने ही तो कहा था
मैं तुम्हारे सपनों में कही खो गई
मैं हर वक्त तुम्हे दिल के करीब पाती हूँ
ना जाने कैसे हर क्षण तुम्हें खो जाती हूँ
तन्हाईयों में सिसक सिसक कर रोई हूँ
न जाने कितनी रात मैं ना सोई हूँ
जीवन का हर पल मैंने तुम्हें दे दिया
इसलिए अपना रंगीन सेहरा ही बदल दिया

मैंने कहां देवी सिर्फ अपना दुख बतलाओगी
क्या रो रोकर हमें भी रुलाओगी
जिन्दगी की राह तुमने ही बदल लिया
फिर भी एक वक्त तक मैंने इंतेजार किया
फिर जमाने ने एक बाला मेरे सर मढ़ दिया
मेरे दुखते जख्मों में और भी दर्द भर दिया
जितना निभाना है मुझे आज भी निभा रहा हूँ
मगर जिन्दगी हर पल साथ तेरे ही गुजार रहा हूँ
ऐ पगली हमारा प्यार पावन है
हरी के मन भावन है
जी रहे थे जीवन हम प्रतीक्षा में
इसीलिए आँखों में बारहो मास श्रावन है
और यही वो कारण है
श्वेत वस्त्र तूने किया धारण है
ना जाने कैसे मेरा यहाँ आना हो गया
जिसे खोया था कभी
साक्षात्कार उसी से हो गया
अब मैं तेरे जीवन में रंग बिखेरता रहूंगा
और तेरे प्रेम में जिन्दगी सवांरता रहूंगा
ये श्वेत वस्त्र तुझको रचता नहीं
जीवन का कोई दुख तुझ पर जंचता नहीं
तेरा प्रेम ही शक्ति है
मन की एक भक्ति है
इसी ने योग बनाया है
और मुझे अंजाने में
तेरे समीप खींच लाया है
ये सारा जीवन
खोने के बदल हमने
प्रेम रतन धन पाया है ।

तुझे भुलाने के ख्यालों ने दिल को क्या हवा दी
इस सिलसिले में मैंने सारी उम्र ही गवां दी ।।
हसरते कर रही थी रोज मुझको परेशान
पढ़कर तेरी चिच्ढियाँ मैंने हर रात एक जला दी ।।
होश मुझे अब भी नहीं क्यूं हुये थे हम जुदा
बात थी लेकिन दिल की आँखों ने अश्क बहा दी ।।
फासले बनाने का कोई सबब ही नहीं था पास हमारे
जाने क्यूं हम खफा हुये हम ही ने दूरियाँ बना दी ।।
मिलना अब मुमकिन नहीं हम दोनों ही ऐसे गुम हुये
यूँ कत्ल हुआ उल्फत का ख्यालों में जिन्दगी बिता दी ।।

दिल की तमन्ना तुझे दिल में बसा लूं
आकर करीब तुझको अपना बना लूँ ।।
कहां खो गए हो तुम हमसे दूर जाकर
अब कहां मैं आकर तुम्हारा पता लूं ।।
ख्यालो में तुम्हारे दिल को ये लगा
तेरे दामन में बिखरे हुये अश्क उठा लूं ।।
रिश्ते हमारे जो अभी टूटे नहीं है सारे
सोच रहा हूँ फिर इनको कैसे सम्हालू ।।
रजा क्या है दिल की इतना ही बता
करीब आने का कोई रास्ता तो बना लूँ ।।

ना तुमने कुछ कहा
ना मैं कुछ कह सका तुमसे
एक राह पर थी जिन्दगी
गुमराह हो गई

जुदा होकर भी तुमसे हम
मिलते रहे हर जनम
तकदीर ने की ये बेवफाई
जाने क्या बात हो गई
एक राह पर थी जिन्दगी
गुमराह हो गई

आँखों में था एक सवेरा
प्यार का अपना बसेरा
रोशनी की तमन्ना थी
फिर रात हो गई
एक राह पर थी जिन्दगी
गुमराह हो गई

वफा की राहों में
रूकते नहीं थे हमारे कदम
मंजिले थी अपनी जगह
क्यूँ राहे जुदा हो गई
एक राह पर थी जिन्दगी
गुमराह हो गई

तुम मिलो मुझे किसी भी जन्म
मुझे प्यार की हद से गुजरना है

जज्बातों में इस कदर
रहती हो सपना बनकर
हर जीवन की यादे लेकर
हर जनम तुझे आना है
मुझे एहसास तेरा ही पाना है
मुझे प्यार की हद से गुजरना है

ना जाने किस हाल में हूँगा
मगर देखकर तुझे पहचान लूंगा
एक बार जो तुम मिल जाओ
तुम्हारे प्यार में है रंग जाना
मुझे एहसास तेरा पाना है
मुझे प्यार की हद से गुजरना है

जमाने का हर जहां में सामना होगा
गर इंसानियत का नहीं जमाना होगा
फिर भी आओगे बनकर दिलदार मेरे
ये हौसला दिल में जगाना
मुझे एहसास तुम्हारा पाना है
मुझे प्यार की हद से गुजरना है

आती रही ख्यालों में
तुम सदा
मेरी तन्हाईयां भी तुम्हे
याद करने लगी थी
ये मन
हर एक पल तुम्हे
देखने को तरसता रहा
मगर मेरे करीब
तुम्हारी तस्वीर भी तो नहीं थी
सिर्फ तुम्हारा आभास
ठंडी हवां के झोंके में
लहरों के कलरव में
पहाड़ो की स्तब्धता में
पूर्णिमा के श्वेत वस्त्रों में
तुम हो
मेरे जीवन की तुम
मीठी वेदना का
असीम सुख हो
मेरा आधार हो
मेरी कविता हो
मेरे रग रग में
तुम ही मेरी आशा हो
मेरे धड़कनो में तुम हो
मेरे एकांत
व्याकुल जीवन का
क्षितिज
तुम हो

तुमको जितना नसीब हुआ वो प्यार मेरा क्या कम था
मेरी किस्मत मे तो तेरे बिछड़ने का ही गम था ।
कमबख्त अपने प्यार में ऐतबार बोहत था हमको
फिर राहो में हमको तेरा अकेला छोड़ना क्या कम था ।।
तेरे नापाक इरादो से महफूज कभी न हुये हम
मगर दिल से जो मरता था इतना ही क्या कम था ।।
नजदीकियाँ जताते रहे और कितने तुम दूर हुये
हम दोनों के दरमयां मुझे इन्हीं फासलों का गम था ।।
हम तो मुहब्बत करते है खुदनुमाई के लोग कम नहीं
तुम्हें शौक था आजमाने का तो जमाना क्या कम था ।।

मेरी याद में तुझे भी दर्द कहीं होता होगा
आँखों में आंसू ना सही मन तेरा भी रोता होगा ।।
धीमी सी आहट देकर खुद को हमसे छुपाना
ख्यालों में मुझसे लिपटकर तू भी तन्हा रोता होगा ।।
जहां जमाने ने मिलकर हमको तुमसे जुदा किया
वो मोड हर वक्त तुम्हे चेहरा वही दिखाता होगा ।।
सुबहो शाम राह पर रोज मेरा इंतेजार करना
हर घड़ी वही लम्हा ठिकाने पर तू आता होगा ।।
अपनी राजे उल्फत को छुपाकर कही जमाने से
मेरी जुबां पर अपना नाम सुनने को तरसता होगा ।।
किसी बहाने रोज शाम मेरे बुलाने के लिए
और मुझे सताने को दिल फिर तेरा तड़पता होगा ।।
जिन आँखों में एहसास तूने किया हुस्ने शबाब अपना
गुम हुये उस नजर का हर लम्हा तुझे मलाल होगा ।।
जितने जन्मों के वास्ते किया तुमने इकरार हमसे
संगे वफा हर कदम तुझे मंजिल वही दिखाता होगा ।।

तन्हाईयाँ कहती है
हसरतो में है जिन्दगी
तुम मुझसे जुदा हो
मैं भी हूँ तुमसे जुदा
मगर जो ना कह सकें हम
उन अल्फाजों में है जिन्दगी

मिलने के ख्यालातो में
पाने की चाहतो में
इन फासलो में बेवजह
रुलाती है जिन्दगी

प्यार के सफर में
तेरी चाहतों के असर में
लिखते रहे जो कागज पर
उन अल्फाजो में है जिन्दगी

जीवन की बस यही कड़ी
आज भी है वहीं पड़ी
किस जन्म होंगे तुम्हारे
इस उम्मीद में है जिन्दगी

कैसी थी वो दीवानगी
तेरी बांहों में थी जिन्दगी
हर पल तेरे ख्यालो के
आगोश में है जिन्दगी

वो शबनमी तेरी आँखे
मुझे भी गई थी रूलाके
खामोश उस निशा की
बरसात में है जिन्दगी

नजरे कह रही है
न देखा था ये समां
तुम इतनी खूबसूरत हो
मुझे तुमसा मिलेगा कहां

तू बेवजह है परेशां
मैं दिल से तुझपे मरता हूँ
जो दे सके ना कोई
तुझे प्यार इतना करता हूँ
मैं चाहूँगा बस तुझे
मुझे तुमसा मिलेगा कहाँ

तुझे इतना मैं बता दूँ
तुम नजरे ना चुराना
लग जाएगा जख्म दिल को
मेरा प्यार बोहत पुराना
तुम हमसफर ही बनकर रहना
मुझे तुमसा मिलेगा कहां

गर तू है साथ मेरे
मैं दुनिया भी छोड़ दूंगा
तेरे साथ जीने के वास्ते
दीवारे सभी तोड़ दूंगा
छोड़ दूंगा मैं सारे बंधन
मुझे तुमसा मिलेगा कहां

जिन्दगी को मिल जाये तुम्हारा ही सहारा
सपनो को मिल जाये साथ तुम्हारा
गर बेवजह हो जाये जिन्दगी हमारी
फिर तुम्हें ढूँढूंगा कहां
मुझे तुमसा मिलेगा कहां

पल भर में
प्रिय तुम्हारी दिशा का संकेत
अपनी भावाओं में निरंतर
बांधने वाली तुम्हारी प्रवृत्ति का प्रयत्न
लेकिन कृत्रिम
सिकुडी तुम्हारी इंद्रियों को
मेरी भावनाओं में
तुम्हारी गहरी व्याख्या का
कोई अनुमान नहीं था
तुम्हारे अनुरूप बहुत समय तक
तुम्हारे प्रभाव में लगातार
किन्तु तुम गहरे प्रेम के परिचय से
अनभिज्ञ
तुम्हारा आकर्षित करने का
अकसर गंभीर क्रम
तुम्हारी आँखों में प्रतिबिंबित उल्झन
वास्तविकता को
व्यक्त करने का अवसर
तुमने दिया ही नहीं
यातना को तुमने सुना
ना कभी महसूस किया
आत्मीयता का परिचय
मृत्यु पलकों में
इतना सरल कलम से
लिखकर ही विदा करना
विश्वास नहीं होता
तुमसे मेरा
अंतिम भेंट

तुम तो बेवफा हो मगर हम ये इकरार करते है
ख्यालो में जीते है, तुमसे ख्यालों में प्यार करते है
छूट गया जो साथ तुम्हारा इसी हादसे के गम में
हर शाम मैखाने में थोड़ी जिन्दगी तबाह करते है ।।
दिल में तेरी याद लिये जीने की खातिर
जिन्दगी की हर खुशी तुझपे निसार करते है ।।
रूठे रहोगे गर हमसे हमको नहीं इससे गिला
मगर तेरे दिल में रहेंगे सदा दिल से इख्तियार करते है ।।
खुशी में क्या गम में क्या अकेले क्या संग में
हमसा कोई दिलबर कहां जो दिल से प्यार करते है ।

चाहत तेरे दिल की फिर भी बनकर रहूंगा
मैं तेरी जिन्दगी से जब चला जाऊंगा ।।
खो जाये रास्ते मिट जाये गर मंजिले
दीवानगी है मुझपे प्यार तुमसे करता रहूंगा ।।
गर तुम्हे फिक्र हो इस जन्म हमारी मुहब्बत का
मैं हर जन्म साथ तुम्हारा निभाऊंगा ।।
मुहब्बत कभी खत्म ना हो हमारी
ये आरजू तेरे दिल में जगाता रहूँगा ।।
मुझको तुम ख्यालों में हर पल रखना तुम्हारे
मैं रोज तेरे ख्वाबों में आता ही रहूंगा ।।

हर जख्म अपना बयां करें या ना करें
दर्द तो खुद ही आँखों से बिखर जाएंगे

दिल की बाते गर दिल ही में रह जाएंगी
कह ना पाये अगर वक्त कहीं रुक जाएगी
तड़पेंगे हम और दर्द हमको हर पहर सताएंगे
दर्द तो आंखों से खुद ही बिखर जाएंगे

तुम्हारी आदतो से मुझको जिन्दगी मिल गयी
मुरझा गयी थी मैं फिर भी खिल गयी
तुम आओगे जीवन में हम बहारो को महकाएंगे
दर्द तो खुद ही आँखों से बिखर जाएंगे

तुम्हारी वफा का एहसास मुझे है तब से
अंधेरो में थे हम आफताब हुये जब से
तेरी रौशनी में जीती हूँ तुझमें ही जल जाएंगे
दर्द तो खुद ही आँखों से बिखर जाएंगे

मैंने जिन्दगी के साथ एक करार कर लिया
तेरे साये में रहना ही इख्तियार कर लिया
अब किस्मत की लकीरों को हम भी आजमाएंगे
दर्द तो खुद ही आँखों से बिखर जाएंगे

रूक गये अरमान मेरे
आकर सारे तुम्ही पे
तुम ही हो मेरी ख्वाहिश
तुम ही हो मेरी मंजिल

देख रहा हूँ ख्वाब तेरे
पर तू नहीं पास मेरे
तन्हाई भी चुभ रही है
तुम हो जाओ मुझको हासिल
तुम ही हो मेरी ख्वाहिश
तुम ही हो मेरी मंजिल

फिजाओ से पूछता हूँ
तुझे बहारों में ढूंढता हूँ
तू इक लहर है जीवन की
बिन तेरे कुछ नहीं मैं साहिल
तुम ही हो मेरी ख्वाहिश
तुम ही हो मेरी मंजिल

साथ बंधा हूँ तेरे हर पल
तुम आस्मां हो मैं बादल
तुम चाँद हो मेरी आँखों का
बेताब मैं इक चकोर दिल
तुम ही हो मेरी ख्वाहिश
तुम ही हो मेरी मंजिल

मेरे द्वारा अनुदित
इंतेजार के क्षणो में लिखी एक व्यथा
आश्चर्य तो यही है
गति में भी शब्द तरंग कही थम गया
नहीं तो मैं भी उन्हें
भूल जाता
मेरा यथार्थ
उनकी आँखों का एक सपना जो था मैं
लेकिन उन पर से
मेरी यात्रा गाथा कितने दिन और
गहरे प्रेम का
कभी अनिश्चयात्मक समापन हो भी सकता है
किन्तु कोई पीड़ा आवेश
प्रत्यक्ष कभी भी
अभिव्यक्त न कर सका
तीर सा छू लेने वाला
कोई भी स्पर्श नहीं चाहा था
फिर भी कुछ आस्था के प्रति
व्याकुल मन
एक अवधि तक
प्रतीक्षा में व्यर्थ
शायद यही था
कभी नहीं मिलने का
कितना सुंदर
उनका
मूक प्रस्ताव
इंतेजार के क्षणों में

होंठो की खामोशियाँ हमें किस मंजिल पर ले गई
हम दोनों ही बेजुबां रहे और जिन्दगी ठहर गई ।।
बिगड़े हुये जमाने को छोड़कर आया हूँ पास तुम्हारे
हैरान हूँ इस बात पर के तुम भी खफा हो गई ।।
दर्द जो ताजा अभी आपने हमको दिया
दिल हमारा तोड़ दिया जख्म गहरी हो गई ।।
तेरे दामन में सर रखकर कुछ सुकून जो मिल जाता
तुम हमारे जो ना हुये दुनियाँ ही खत्म हो गई ।।
सुलझ गए थे सारे रिश्ते रंजिशे भी न थी
मिले थे बड़ी मुश्किलों से आसान होकर बिखर गई ।।
जग छोड़कर आया हूँ तुझे अपना बनाने के लिये
तुम जो हरीफो के साथ मिले जिन्दगी तबाह हो गई ।।

प्यार की शम्मा आँखों से कम हो रही है
तेरी बेरुखी में जिन्दगी बेरंग हो रही है ।।
कब तलक फिरता रहूंगा मैं वफा की राह में
दिल के तारों में अब जंग लग रही है ।।
जब से तेरी आँखों ने झुकाई है पलके
उलझनें मोहब्बत में और बढ़ा रही हैं ।।
तकदीर से मिले हो उल्फत के रास्ते में
तकदीर ही राहो में कांटे बिछा रही है ।।
तुम मेरे इरादो को टूटने कभी न देना
हौसला है दिल में हमें वक्त डरा रही है ।।

रास रंग खेलने होली मैं तेरे संग आयी रे
फाल्गुन के रंगों में और रंगीन हुई पुरवाई रे
होली आयी रे आयी रे होली
रंग प्यार के लायी रे

पीया के रंगों में रंगना है मुझको
सतरंगी रंगो में सजना है मुझको
फागुन के गीतों के संग में
पिया के दिल को भायी रे
रंगों की ऋतु आयी रे
होली आयी रे आयी रे होली
रंग प्यार का लायी रे

चाहे कितने रंग गुलाल किसी को फेंकू
एक तेरा ही चेहरा पास अपने देखूं
जब तक न भर लू अबीर लाल तेरे माथे पर
मेरा दिल ही मचला जाए रे
रंगों की ऋतु आयी रे
होली आयी रे आयी रे होली
रंग प्यार का लायी रे

आज मैं साजन तेरे रंगों में ढल गयी रे
तू मेरा कान्हा हुआ मैं तेरी राधा भयी रे
ऐसे ही रंगों में रंगना जीवन मेरा
मैं जन्मों के लिये आज तेरी हुई रे
रंगों की ऋतु आयी रे
होली आयी रे आयी रे होली
रंग प्यार का लायी रे

जिन्दगी में लम्हे रोज इस तरहा आते रहे
हसरते बढ़ती रही और ख्वाब सताते रहे

जब से मिला तू मुझको जिन्दगी बदल सी गयी
रात मेरे दिन हो गये दिन भी रात हो गयी
ख्वाहिशे जगाती रही तुम करीब आते रहे
हसरते बहती रही और ख्वाब सताते रहे

तन्हा हूँ बिन तेरे जरूरत है तुम्हारी
आँखों में रहती है हरदम सूरत ही तुम्हारी
मीत बनकर हम तुम्हारे गीत ही गाते रहे
हसरते बढ़ती रही और ख्वाब सताते रहे

तुझे अभी मालूम नहीं मेरी शबे उल्फत का
दिल जो बंधा है तुमसे खुशनुमा एक एहसास का
हर लम्हा मेरे रुह में तुम आते जाते रहे
हसरते बहती रही और ख्वाब सताते रहे

उनके हृदय से लग जाना
मुझे स्मरण है
उनकी गोद में जकड़ जाना मेरा
फिसल जाता था जब कभी
बाजुओं से उनके
बड़े प्यार से मुझको
सीने से लगा लेना
उंगलियों के स्पर्श से
जब मैं सो जाता
मेरे चुंबन से नींद में उनका
विलीन हो जाता
उनके स्नेह के आलिंगन में
मेरा निरामय जीवन
मैं छिन गया हूँ
उनके ओझल हो जाने से
मेरा एकाकी जीवन
उनका बिंब हो गया है
मेरे बाल्यपन से लड़कपन तक
उनकी छाया में
प्रत्येक उपलब्धियों से लेकर
उनके स्नेह से ओत प्रोत मेरा जीवन
मेरे मन में
उनकी ममता का सर्वव्यापी स्वरूप
उनकी आत्मीयता उनकी करूणा
उनकी आकृति
शांत बादल की तरहा
तैर रही मेरी आँखो में

उनकी स्तब्ध निद्रा
संवेदनाओं का विकराल रूप
कितने बरस कितने मौसम
कितनी सुबह कितने सांझ
मुझको समर्पित उनकी वेदना
मनहूस भीड़ को
मैं कब तक भुला पाऊंगा
विसर्जित फूलों की तरहा
अति प्राचीन
उनका देह फिर भी सुन्दर
उनकी चिता का अग्नि प्रवेश
उनका अदृश्य रूप
उनके शरीर का शून्य विस्तार
मैं स्तब्ध रह जाता हूँ
जब अनुभूति होती है मुझे
किस तरहा
बेहाल थे हम लोग
और थी
मेरी माँ

तुमसे दूर रहकर कोई लम्हा ही कटता नहीं
फासलों में इतना दर्द है जख्म ही भरता नहीं ।।
अकेले है फिर भी तुम मेरी तन्हाई में शरीक हो
हर सांसों में तुम हो पर साथ तेरा मिलता नहीं ।।
दिन ढल गया अभी रात अभी बाकी है
ख्वाब ही में कुछ कह जाओ खबर कोई मिलता नहीं ।।
किसी रोज जिन्दगी में हकीकत बनके आ जाओ
जो प्यार मुझे चाहिये वो प्यार कहीं मिलता नहीं ।।
तुमको क्या मालूम हम तो तुझमें ही जीते है
धड़कनों में सांसे है तेरी तू मगर मिलता नहीं ।।

आँखों में देखकर तुमने नजर जो झुका दिया
तुमसे मुहब्बत करने का ख्याल दिल में जगा दिया ।।
ऐसे दस्तक देकर तुम दिल के करीब आ गये
तुमने मेरी जिन्दगी में नई उमंग जगा दिया ।।
फिजाओ में चारों दिशा अंधेरा था तन्हाई थी
तेरे इशारो ने जिन्दगी को कितना रोशन बना दिया ।।
बुझने लगी आँखे मेरी जब ख्यालों ही ख्यालों में
तुमने इन लम्हों में मुझको कितना ख्वाब दिखा दिया
तेरे कदमों की आहट जब मेरे गुल्शन में आयी
चाँद सा मुखड़ा देख तेरा फूलो ने सर झुका दिया ।।

तुम मेरे इतने करीब हो
तेरी सूरत मेरी आँखो में रहती है
दूरियां है फिर भी दिल मेरा
तुमसे मिलने को कहती है

तू रहे ना रहे पास मेरे
हम महसूस करते है तुम्हे
फिजाओ में हवाओ में तू
हर झोंके में बहती है
दूरियां है फिर भी दिल मेरा
तुमसे मिलने को कहती है

गर दिल ही न होते हमारे
तुम भी हमारे न होते
मेरे राहो की न कोई मंजिल होती
परछाईयां ये कहती है
दूरियां है फिर भी दिल मेरा
तुमसे मिलने को कहती है

तेरे आंचल में शाम ढलती रहे
तुम्हारे आगोश में रात पलती रहे
तुमको पाने की तमन्ना
हर पहर मुझसे ये कहती है
दूरियाँ है फिर भी दिल मेरा
तुमसे मिलने को कहती है

ये पुरानी यादे लगती है कल जैसे
तुम आज भी मुझमें हो महसूस हुआ है जैसे

शम्मा सी होती हो रोशन
इक धुंध सा खो जाती हो
तमन्ना तुम्हे देखने की
निगाहों में दे जाती हो
पलके आज पड़ी है तेरी राहो में जैसे
तुम आज भी मुझमें हो महसूस हुआ है जैसे

आँखों में बेकरारी है
तुम्हें एक नजर पाने की
कोई आहट है आने का
खुश्बू जैसे तेरे बदन की
ये रात भी ढल जाये तेरे दामन में जैसे
तुम आज भी मुझमें हो महसूस हुआ है जैसे

दिल देकर मैंने दिल लिया
प्यार मैंने तुमसे किया
मेरी सांसो में ही रहोगे
ये वादा मैंने तुमसे किया
वक्त ही ना जाने क्यूं हो गया बेवफा कैसे
तुम आज भी मुझमें हो महसूस हुआ है जैसे

तुमने रचना का जो आधार रखा
धन्य है वो तपोवन की हवा
जो तुम्हारे करीब है
तुम्हें छूं तो सकती है
इस अध्याय का अंत मत करो
मेरे दुष्कर्मों को उदय न होने दो
मुझे मेरा समूल नष्ट कर
विकसित करना होगा तुम्हारे हृदय को
तारो को झकझोरना होगा मुझे
तुम ही हो मेरा प्रथम साक्षात्कार
और तुम्ही हो मेरी प्रेरणा के शव
आँखों पर उतर आएंगी धूप
जब तुम्हारे प्रलय की बाढ़ में
मेरा प्रकाश तुमसे ओझल होगा
तुम्हारी और मेरी निष्क्रिय भूमिका
जो पल पल निरर्थक होती जा रही है
सिर्फ एक बार और सदा के लिये
तुम्हारी आँखों पर प्रतिबिंबित
कोई विराट तुम्हारी वेदना को मैं
चाहता हूँ धो लूं अपने रक्त से
लाल कर दू तुम्हारे गालों को
अनगिन होठों के स्पर्श से
और धो लू अपनी ज्वाला
प्रशांत तुम्हारे ज्वार भाटे में
तुम ही हो मेरा प्रथम साक्षात्कार

तेरी आँखों में रुकी बूंद को अगर मैं तरसता नहीं
किसी सावन वो दर्द मेरी आँखों से बरसता नहीं ।।
उनकी बेजुबां मुहब्बत को दिल ने अगर समझा होता
तासीर गहरे इश्क का आज महसूस करता नहीं ।।
उल्फत में हमारे दरमयां फासले ही न होते अगर
जुदा होकर भी तुम्हारी जरूरत मैं समझता नहीं ।।
उनकी एक मुस्कान पर बनायी थी हमने दुनियां
वरना हसरते जिंदा न होते धड़कने भी धड़कती नहीं ।।
तन्हाई में उनकी शर्म का परदा उसी दिन उठा दिया होता
हर रोज अपने चाँद के दीदार को मैं तरसता नहीं ।।

आशना हूँ तुमसे और करीब होना चाहता हूँ
तेरी हर नजर में शरीक होना चाहता हूँ ।।
दूर ना जाओ कहीं मेरी नजरों से तुम
अपनी निगाहों में तुमको ही बसाना चाहता हूँ ।।
ख्यालों में हमारे तुम रहते हो हमेशा
सपनो में बस तुम्हें ही पाना चाहता हूँ ।।
इश्क है हमको तुमसे दूर न रहना कभी
तेरे दामन में अपना प्यार लुटाना चाहता हूँ ।।
तुम रहते हो मेरे दिल में इस तरहा
हमसफर मैं जिन्दगी का तुम्हें बनाना चाहता हूँ ।।

शाम मैंने ख्यालों में गुजारी
रात मेरे ख्वाब हो गये
कुछ बाते अभी है अधूरी
फिर तुम याद आ गये

जब देखा था पहली बार
हमको नहीं था तुमसे प्यार
देखते ही देखते तुमको
इक रोज तुम्हारे हो गये
फिर आज तुम याद आ गये

खिड़कियों में मैं करता था इंतेजार
झरोखे से तुम्हारा देखा है शृंगार
तेरी पायल की धुन पर गाते रहे हम
ऐसे तुम्हारे प्यार में हम कैद हो गये
फिर आज तुम याद आ गये

खाई थी जो कसमें हो सकी न पूरी
खो गई है मंजिलें अब हो गई है दूरी
किससे कहे हमको अब भी है प्यार तुमसे
न चाहकर भी हम बेवफा हो गये
फिर आज तुम मुझे याद आ गये

तुम मेरे जिन्दगी की अनबुझी सी प्यास हो
तुम मेरी जरूरत मेरे प्यार का एहसास हो

ढलती भी नहीं
रात सोने भी नहीं देती
चाहतों के मंजर से
अरमानों में खो जाती
हर पल ऐसा लगता है
क्यूँ तुम मेरे लिये खास हो
तुम मेरी जरुरत मेरे प्यार का एहसास हो

ना खत्म होगी जमाने की रुसवाई
ना खत्म होगी हमारी ये तन्हाई
तसव्वुर में लगता है ऐसे
तुम मेरे बहुत पास हो
तुम मेरी जरुरुत मेरे प्यार का एहसास हो

तासीर गहरे प्रेम का
आँसुओ ने दिखा दिया
दर्द हो जख्मो का फिर भी
तुझे पाने को तरसा दिया
टूटे हुये हौसले में जैसे
मिलने की इक आंस हो
तुम मेरी जरुरत मेरे प्यार का एहसास हो

मेरा
प्रतिक्षण, प्रतिफल, अनुकूल
उनका अवलोकन
पुरातन युग से
मयंक सा मुख उनका
नीरज अधरो पर लिए
धोर जलध वालो को
सरिता तल से
दृष्टि निरंतर
मैं तट पर
करता उनका शृंगार
अंबर जैसे समीर से नभ पर
सुरसरि भीतर से
मेरा हर्ष आगम
उदीयमान हृदय मेरा
मधुर मुस्कान लिये
परिचित जैसे हो गए वो
अंतः सदन से
मैं तट पर
करता उनका शृंगार
हृदय मेरा
लीन उनकी रचना में
स्वरूप उनका हर समय
लिये अपनी भावना में
मिटती नहीं आकृति उनकी
मैं तट पर
करता उनका शृंगार

तुमको मोहब्बत है इतना ही जरा बता दो
अपने दिल में इक प्यार का आशियाना बना दो
मेरे दिन और रात तुम्ही से होते है रौशन
दिल में अपने इक प्यार की शम्मा जला दो ।।
प्यार के ये सिलसिले तो चलते ही रहेंगे
पहले तुम अपने प्यार में मुझको दीवाना बना दो ।।
मुझको है तेरे दिल में हीरहना करना न इंकार
चाहे तो इश्क का मुझे इंतेहा ही बना दो ।।
हम तो चल पड़े अपने वफा की राहो में
मुझको तुम अपनी मुहब्बत का फंसाना ही बना दो ।।

हसरतों ने दिल में आज ऐसी तस्वीर बनायी है
मुद्दतो के बाद लगा तू मुझसे मिलने आयी है ।।
सुबहो से उनसे मिलने जब दिल हुआ मेरा बेकरार
रात भी कहने लगी अभी तो शाम हुई है ।।
जमाने के लहरों से अभी भी खेल रहा हूँ मैं
कि बड़ी मुश्किलों से कश्ती भंवर के पार हुई है ।।
आ नहीं सकता मगर हौसला ही दे मुझे
दिल में दर्द जुदाई का सवार हुई है ।।
उनसे तो पूछो जरा उनकी आँखें क्यूं बरस आयी
कल रात हमसे ख्वाबो में क्या मुलाकात हुई है ।।

दिल में कैद किया है
रिहा कभी ना करना
मुझे बेइंतेहा प्यार है तुमसे
तुम इतना ही प्यार करना

तेरे बदन की खुश्बू है जैसे
सांसों में बह रही है
तुम बनके सुकून जिन्दगी का
महसूस हुआ करना
तुम इतना ही प्यार करना

हयात में कोई किसी से
क्या इतना प्यार करता है
मैं जिस तरहा तुझपे मरता हूँ
तू मेरे प्यार में जीया करना
तुम इतना ही प्यार करना

फूलो से जैसे खिलते है चमन
खिलता हूँ मैं रहके तेरे प्यार में मगन
बीतेगी रोज की तरहा ये रात भी
मुझे तेरे सपनो में है खोना
तुम इतना ही प्यार करना

दिल में इक चुभन सी होने लगी
हर बात उनके ख्यालो में खोने लगी
कितनी मुहब्बत हम करते है तुमसे
न मैं तुमसे कह सका न तुम मुझसे कह सकी

जमाने की आँधियों में आशियाना बनाया
हौसलो से अपने मैं तुम्ही में समाया
उजड़ गये सारे चमन तूफां न रूक सकी
न मैं तुमसे कह सका न तुम मुझसे कह सकी

दूर रहकर भी ख्यालों में मुलाकात होने लगी
गुजरता हुआ वक्त भी मुझसे ये कहने लगी
रख के दामन में सर उनके मैं रो भी न सकी
न तुम मुझसे कुछ कह सके न मैं तुमसे कुछ कह सकी

मेरी तमन्ना थी कि तू तकदीर बनकर आयेगी
प्यार की राहो में मुझको चलना तू सिखाएगी
रास्ते सारे बिखर गये मंजिल न मिल सकी
न मैं तुमसे कह सका न तुम मुझसे कह सकी

असहाय
लेकिन क्यों
सारे खूबसूरत शब्द
प्रेम, अनुराग, स्नेह
क्या यही एक तरीका है
करीब आने का
समीकरण
बनते और जैसे
मोम की तरहा
चिपक जाते शरीर में
वो बादल आया ही क्यों नहीं
जिसका पानी
मेरे
सर की ऊंचाई से ऊपर होता
जमीं फटी नहीं
आस्मां गिरा नहीं
लेकिन हर मौसम का
प्रवेश तो संभव था
सिकुड़े हुये निराश
बंद होठों के
शब्दों को
चालका और झूठा समझना
बहुत सरल था
प्रत्येक अनुपस्थिति जैसे
गर्भवती
माँ बन जाती
और जन्म लेता था

एक संदेह
रोती, सिसकती
खामोश जिसकी
दो आँखे ही
निः शब्द
गुजर जाती थी
मेरे करीब से
लेकिन
समर्पित उनका देह
मेरे समीकरण जैसा नहीं था
फिर भी
बहुत दूर चला जाता
थोड़े ही आँसू
बेसाख्त
अगर
रिस गये होते
मेरे लिये

साथ जीना है तो जिन्दगी में क्यूँ नहीं आते हो
बेवजह ख्वाब बनकर हमको क्यूँ सताते हो ।।
जो तुम्हारी रूह में रहते है रात दिन
उनकी धड़कनों में घर बनाओ फासले क्यूँ बनाते हो ।।
दर्द तो होता है जब कोई होता है रूख्सत
मंजिल से दूर रहके फिर जख्म क्यूं खाते हो ।।
दूर भी नहीं जाना था मगर पास भी तो नहीं आये
कहते नहीं कुछ हमसे फिजूल अश्क जो बहाते हो ।।
ये जिन्दगी महकेगी इक तुम्हारे ही चमन से
मेरे मंजिल की राहो में फूल तुम्ही बिछाते हो ।।
जिन जख्मों का जिक्र तुमने ना किया उम्र भर
मेरे आँसुओं की फिक्र छोड़ो अपना दर्द क्यूं छुपाते हो ।।

गम नहीं है हमको याद बोहत आयी है
तुम जो नहीं पास मेरे बस यही तन्हाई है ।।
जबसे प्यार हुआ हमको चैन नहीं है तेरे बिन
तेरे ख्यालों में डूबा हूँ बेकरारी सताई है ।।
रिश्ता था जन्मों का एहसास हुआ है हमको
चलकर साथ बिन तेरे जिन्दगी जो बिताई है ।।
पलको में तेरे रहूँ सपनो में तेरे सजूं
दिल ने मुझमे हरपल यही तमन्ना जगायी है ।।
तेरे बिन ये जिन्दगी कितनी है अधूरी सी
तुमको पाकर ही मेरे जीवन में बहार आयी है ।।

गर्दिशों में, जख्म कितने खाये है हमने गहरे
एहसास जहां हुआ तुम्हारा हम उसी मोड़ पर ठहरे

तेरे हौसले की कमी फासले की वजह हो गई
ये जिन्दगी भी इस तरहा बेवजह हो गई
हमें तो मालूम था प्यार में अपने थे पहरे
एहसास जहां हुआ तुम्हारा हम उसी मोड़ पर ठहरे

गम के आँसुओं में डूब जाये भी तो क्या
दर्द का जिक्र तुमको कर न पाये भी तो क्या
हमको ही मालूम रहे ये जख्म कितने थे गहरे
एहसास जहां हुआ तुम्हारा हम उसी मोड़ पर ठहरे

तुमको तो साथ चलने का ख्याल ही नहीं आया
मुहब्बत में वादों को निभाना ही नहीं आया
हम तो प्यार में फिर भी जमाने के आग से गुजरे
एहसास जहां हुआ तुम्हारा हम उसी मोड़ पर ठहरे

तेरे हुस्न के साये में जिन्दगी जी लूंगा
तेरी आंखों के मयकदो में जहर भी पी लूंगा

करता हूँ महसूस तुमको
मैं अपने ख्याल में
करता हूँ कुरबान खुद को
तेरे ही जमाल में
नशा है रात मैं मदहोश जी लूंगा
तेरी आँखों के मयकदो में जहर भी पी लूंगा

इतनी रंगीन रातों में
बहकी हुई सी बातों में
पिघल रहा है दिल मेरा
मैं तेरा रांझा हूँ तुमको हीर बना लूंगा
तेरी आंखों के मयकदो में जहर भी पी लूंगा

सांसें रुकती नहीं
दिल सम्हलता नहीं
ठोकरे खाये बिना
प्यार मिलता नहीं
गर तू साथ चले, तुझे अपना बना लूंगा
तेरी आँखों के मयकदो में जहर भी पी लूंगा

मरने के बाद भी
जीवन दर्शा रही
हाथों की रेखाएं
मौन
यदि मुझे मालूम होता
मेरे मरने की तारीख
तो मैं उन्हें भी ...
जिसे मैंने हृदय से महसूस किया
जिनकी आँखों में
मेरा भी कोई चित्र होता था
कितना अच्छा होता
उनके आँसुओं में
डूब पाता अगर मैं
अब मैं
हृदय से तुम्हें
संकोच में बांधूगा
जिससे तुम
दया का स्वांग भी
मेरे समक्ष न रच सको
मेरे उद्वेग का
तुम्हें क्या पता
मेरा आर्तनाद को
तुमने कभी सुना
और न ही महसूस किया
मेरे गहरे विशाद को

तुम मेरे
विदीर्ण मन की गूंज में
मेरे कलम की शैली में
मेरी मूक भाषा में
अगर धंस भी जाओ
लेकिन
अपने स्तुति के
केन्द्र बिंदु को
अकस्मात विदा करने का पश्चाताप
तुम्हें होगा
तुम्हारे मन में
दूर जाने का असीम कष्ट
तुम्हारी आँखों में
आँसू होंगे
तुम्हारी भावनाओं में
तुम्हारे प्रेम की तड़प होगी
तुम उससे भागोगी
उससे दूर जाने के
नित प्रयत्न के बाद भी
बेसाख्त होगी
मेरी याद

तुम रहते हो आसपास हम साथ तेरे ही रहते है
शामो सहर ख्याल और रात तुझे ख्वाब कहते है ।।
तुम दूर हो लेकिन इन फासलो से क्या
सिलसिला हम चाहत का दिल में जगाए रहते है ।।
मेहरूम न रहूँ मैं न रहे मेरा ये दीवानापन
रहते हो मेरी धड़कनों में एहसास मुझे ये कहते है ।।
तुझे मेरी उल्फत का ऐतबार हो न हो
तेरे प्यार की खुश्बू हम बहारों में महकाते है ।।
हम तो मर मिटे है तुम्हारी मुहब्बत में
ये बात कभी रूठकर तुमसे कभी हँसकर जताते है ।।

अभी दिन ढला है शाम भी जाएगी
फिर वो तसव्वुर तेरा हमको सताएगी ।।
मुद्दतों से इश्क में सब कुछ लुटाये बैठे है
तेरे प्यार में लगता है मेरी जान चली जाएगी ।।
तमन्ना एक दिल की मिलकर बताना है तुमको
लिखकर कभी जो तुमको बतायी न जाएगी ।।
मिल नहीं सकता है तो ख्वाबों में मिल जरा
वरना ये दिल की बाते दिल में ही रह जाएगी ।।
मुहब्बत मे मिलना क्या है बोहत जरूरी
बिछड़ने का गम जहां दोनों को जलाएगी ।।

आज पुरानी राहो में दिल की बात हो गई
ऐसा लगा तन्हाई में तुमसे मुलाकात हो गई

हसरते थी दिल में कई तेरे कदमों की आहट मिली
मेरे कदम जहां पड़े ठिकानो पर थी तुम खिली
ढूंढता रहा जिसे गली गली तेरी खुश्बू मुझे वही मिल गई
ऐसा लगा तन्हाई में तुमसे मुलाकात हो गई

तड़पता हूँ तेरे प्यार को मर के भी प्यार में
कोई नहीं चाहने वाला मुझे तुमसा जहान में
गर्दिशो में तुम मेरी हमराह सी बन गई
ऐसा लगा तन्हाई में तुमसे मुलाकात हो गई

दर्द जमाने का पीकर भुलाया था मैंने तुझे
कही मेरे दिल की आवाज न तड़पाए तुझे
अच्छा हुआ आकर मेरे ख्यालों में कही खो गई
ऐसा लगा तन्हाई में तुमसे मुलाकात हो गई

प्यार की हर डगर में
चेहरा तेरा नजर आया
अपनी दास्तां जो याद आयी
तुमको मैंने करीब पाया

छुप छुप के रोज मिलते रहे हम
वादियों में साथ चलते रहे हम
जब चलना था साथ जिन्दगी में
हम बिछुड़ गये कैसा मुकाम आया
अपनी दासतां जो याद आयी
तुमको मैंने करीब पाया

लुटकर भी कट रही थी जिन्दगी
उल्झनों में भी थी तुमसे बंदगी
ख्यालो में तुम रहते हो
साथ रहेगा तेरा ही साया
अपनी दासतां जो याद आयी
तुमको मैंने करीब पाया

हसरतो में बसे तुम ही तुम हो
जिन्दगी में हुये जब से गुम हो
चांदनी में ढूंढता हूँ तुमको
तू आज मेरे सपनों में आया
अपनी दास्तां जो याद आयी
तुमको मैंने करीब पाया

एक नया मैं
और मेरा यह एक नया क्रम
मैंने स्पर्श ही किया था
सिसकती होठों का
कितना स्निग्ध
और अकुलाहट से सिमटना उनका
उनके मन को छुआ है मैंने
और एक नया मैं
ये भूल गया था शायद
मेरा यह एक नया क्रम है
जीवन ने
कहां क्यों और कैसे
एक नया संग पाया
मेरी अवाक उंगलियों ने उनकी
कोमलता को महसूस किया
बिल्कुल प्रशांत की तरहा
भीतर दानवीय मछलियों के आक्रमण में
गहराई का पता नहीं
उनकी प्रत्येक ऊचाईयों से
गुजरा है मेरा स्पर्श
एक नया मैं
ये भूल गया था शायद
मेरा यह एक नया क्रम है
धीमी सी आह में
उसकी आतुरता महसूस की है मैंने
कितनी उमंगो से झेलती
समर्पित
बेसब्र हालातो को

बिल्कुल शांत
जैसे कुछ कहा हो
मैंने सुना तो नहीं
देखा जरूर था आँखों में
जैसे
किसी आसमां से लेकर जमीं तक
रंग को पहचाना
और एक नया मैं
ये भूल गया था शायद
मेरा यह एक नया क्रम है
हरियाली के उतार चढ़ाव से घिरी
ढलान की उस पगडंडी पर
जुबां से चखा है
उस पिघली बर्फ सी बूंद को
जो बादलों से होती हुई
आसमान के एक छोर से सीधे
चली आ रही थी नीचे
यही था एक मानवीय चेतना
एक काल्पनिक संरचना का
वास्तविक बोध उनको जानने का
और एक नया मैं
ये भूल गया था शायद
मेरा यह एक नया क्रम है

तुमसे मुहब्बत हुआ है मुझे ऐसे
प्यार जो करता हूँ तुझे बताऊं कैसे ।।
तू समझता है इसे खेल मेरा
दिल के करीब तुझे लाऊं कैसे ।।
बेकरारी कभी दिल की जाती ही नहीं
गर तुझे महसूस न हो सुकून पाऊ कैसे ।।
जिन्दगी की तस्वीर जो बने हो तुम
तमन्ना ये दिल की तुझे समझाऊं कैसे ।।
न आओगे तुम मेरा बनके हमसफर
प्रीत की शम्मा दिल में जलाऊं कैसे ।।

वो शाम याद आ गई जो दर्द पिया था आपने
छुपाकर अश्क पलको में रुख्सत किया था आपने ।।
कर दिया बेनाम हमको खत्म की कहानी हमसे
जमाने की मुहब्बत का ये सिला दिया था आपने ।।
दिल लुटाकर भी अपना कुछ हासिल ना हुआ जिसे
अपनी जिन्दगी में ऐसी जगह दी थी आपने ।।
जख्म जो भूले थे हम तुझे पाने की चाह में
छोड़कर अकेली राह में लौटाई थी आपने ।।
वो ख्वाब जो कभी सच नहीं हुआ करते
जहे हयात में हमको ये क्या दिया था आपने ।।

मुहब्बत जवां है मगर जिन्दगी जा रही है
तुम आ जाओ दिल को करार मिल जाएगा

तेरे हौसले के दम पे जिन्दगी तो गुजर गयी
दूरियां थी इतनी कि जिस्म ही सिहर गयी
कुछ सांसे है बाकी ये रूह फना हो जाएगा
तुम आ जाओ दिल को करार मिल जाएगा

लेटकर तेरे दामन में मखमली धूप याद आ गयी
तेरे कजरारे नैनो की मुस्कान याद आ गयी
ले जाऊंगा सभी याद अपने तू नजर जब जायेगा
तुम आ जाओ दिल को करार मिल जाएगा

रास्ता ही देखते रहे हमने वफा कर दिया
तमन्नाये मरती रही दामन आँसुओं से भर दिया
आखिरी गुजारिश है फिर तू रिहा हो जाएगा
तुम आ जाओ दिल को करार मिल जाएगा

खो गये हो तुम कहां जीवन के पल छिन
छलकते है आँसू बिना तेरे हर दिन

तन्हाईयों के पल में
महसूस होती है तेरी कमी
बरसते है जो आँखों से
कुछ बूंद है वो शबनमी
जीना ही कठिन है अकेले है तेरे बिन
छलकते है आंसू बिना तेरे हर दिन

मेघ बरसते हैं शूल बनकर
चुभती है धूप कांटे बनकर
ढूंढ रहा हूँ गली गली
उल्फत में तुझे खोकर
हमे रास आती नहीं इक पल भी तेरे बिन
छलकते है आँसू बिना तेरे हर दिन

हर चेहरे में तुम नजर आते हो
जब आँखों में मेरे बस जाते हो
आवाज तुम्हारी सुनता हूँ
जैसे दूर कही मुझे बुलाती हो
रास्ते वो कहा खो गये हमराह तेरे बिन
छलकते है आँसू बिना तेरे हर दिन

तुम्हारी सूखी मुस्कान को
आँखों ने
जैसा भी देखा हो
अर्द्ध पारदर्शी तुम्हारी
भावनाओ को
जैसा भी महसूस किया हो
तुम्हारी ही तरहा आतुर
मैंने
अपने असहाय मन को
कभी
गुड़ियो के खेल सा
अपने पागलपन को
क्षण भर के मेल सा
अपने उदास मन को
तुम्हारे हृदय सा
जब भी देखता हूँ
तब मैं भी रोता हूँ
मेरी आँखों में
गहरा संतोष
तभी होता है
जब तुम्हें एकांत
मेरी संरचना में लीन
मेरे इंतजार में
व्याकुल देखता हूँ
तब मुझे आभास होता है
तुम्हारी आस्था
मुझमें
आजीव्य है

तुम्हारे बिन तन्हा रहा न गया
लम्हा ये दर्द का सहा न गया ।।
जी रहा हूँ मैं ख्वाबों के सहारे
हसरतो को फिर भी भुलाया न गया ।।
कांटों का सफर भी तय कर लिया हमने
उम्मीदो में दामन भिगोया न गया ।।
बना लिया हमने तुम्हें मंजिल का रास्ता
जमाने का सितम हमसे सहा न गया ।।
मर के भी जिंदा है फसाने कितने उल्फत के
दस्तूर ये मगर हमसे निभाया न गया ।।

गुरबतो में आये है हम उनको मनाने
खोये है आज भी वो अपने जहां में ।।
शबे महफिल में जब हुये वो हमसे करीब
चुपके से कहा लौटिये मिलेंगे सहर में ।।
कहते है सभी लोग उनकी सूरत बखूब है
रहते है वो हरदम फिर क्यों नकाब में ।।
हमने सुना महफिल में उनका खुलूस ही अजीब
कातिलो के बीच रहते है बड़े तहजीब में ।।
फिक्र होगा उनको अपने वजूद का जिस दिन
लौट कर आएंगे उस दिन अपने ही शहर में ।।

दिल की चाहत यही है प्यार हम ही से कर लो
मेरा ये ख्याल है हमसफर मुझे बनालो

तुम राह न मुड़ जाना जमाने की खातिर
दिल मेरा न तोड़ना रुसवाई की खातिर
तेरा पीछा न छोडूंगा चाहे हाथ कितना छुड़ालो
मेरा ये ख्याल है हमसफर मुझे बना लो

चुरा लूंगा इक दिन तुमको जमाने से
रोक नहीं पाएगा कोई तुमको इस दीवाने से
मेरा प्यार तुझे ले आएगा होश तुम सम्हालो
मेरा ये ख्याल है हमसफर मुझे बना लो

तसव्वुर में रहूँ दिल को करार नहीं होता
बेकरारी इतनी है मुझसे इंतेजार नहीं होता
बात सिर्फ इतनी है मुझ को अपनी पनाहो में ले लो
मेरा ये ख्याल है हमसफर मुझे बना लो

दिल में हो रही जख्मों की चुभन
तन्हाई में दर्द की उठती है जलन

जीवन के कुछ पल साथ और बित जा
उल्फत की राहो में प्यार मेरा निभा जा
ढल रही शाम बुझ रही है किरण
तन्हाई में दर्द की उठती है जलन

जिन्दगी आसान इक सफर बन जाएगी
आँखों में हमारे मंजिल नजर आएगी
हसरतों में जो खुश्बू है वो तेरा ही चमन
तन्हाई में दर्द की उठती है जलन

जमाने की बंदिशों में दुनियाँ ही बदल गई
दिल के आस्मां में तू चांद बनके खिल गई
जैसे बादल हूँ मैं और तू इक पवन
तन्हाई में दर्द को उठती है जलन

मेरा अस्तित्व
जहां तक स्मरण है मेरा निरामय जीवन
दिशा सीमित है शेष अपना नहीं
इसलिए मैं नाम नहीं देता
अनुभूती है मुझे
सर्वव्यापी देह जो विद्यमान है
अनेक लोगों के स्वार्थों में निहित
जमघट में द्वेष निंदा के मद्धम
मेरा उत्कर्ष
मेरा भविष्य मुझे ज्ञात है
मैं आत्मघात नहीं चाहता
उनकी प्रेरणा उनका लक्ष्य सृजन
मैं वहां तक जा पहुँचगा
जब मुझे स्मरण होगा
मैंने ग्रहण किया है
एक मन को या सफेद वस्त्र को
विश्वास के आलिंगन में
समाविष्ट करने का
मेरा सतत यत्न मेरा आधार
कल्पनाओ के ज्वार भाटे में निहित
मुझे विदित है
मेरा स्वरूप, मेरा संतुलन, मेरी रचना
अल्प प्रयत्न नहीं है
ओझल उनकी आत्मीयता है करुणा है
दुख में व्यथित होते है वे लोग
जिनकी प्रगति की नींव
व्यर्थ विदित है

थक गई है नजरें जिन्दगी मुश्किलों में खड़ी है
तसव्वुर में फिर भी आँखे राहो में पड़ी है ।।
किस्मत की लकीरें कहीं मात न दे दे मुझको
दिल में इक बेकरारी है तेरे दीदार की पड़ी है ।।
मिलने का एक वादा तुमने किया था हमसे
मगर जमाने से मुहब्बत क्यूं छुपाने की पड़ी है ।।
हजारो जख्म लिये चला हूँ तेरे मिलने के वास्ते
तेरी जरूरत मेरी हकीकत है मुझे मरहम की पड़ी है ।।
रूसवाईयों से क्यूं डरते हो हर दर्द हम बाँट लेंगे
जमाना हमें ना निभाए मुझे तेरे साथ की पड़ी है ।।

बेचैन लम्हो से क्या तेरी जिक्र हो गयी
वो भी तेरे बिन यहां तन्हा हो गयी ।।
जिन्दगी में सुकून यूं महसूस होने लगा
तुम मेरे ख्यालों में जब शरीक हो गयी ।।
उल्झने ही बोहत थी मंजिल को पाने में
तुम जो हमराह हुए हमारे राह मिल गयी ।।
जमाने ने तुमको क्या हमसे जुदा किया
जिन्दगी के हर लम्हे तेरे हसरतो में खो गयी ।।
दर्द फासलो का तुमने लिया इस तरहा
दिल देकर हमें अपना तुम भी तन्हा हो गयी ।।

मेरी आँखों में देखकर नजर जो तुमने झुका लिया
तुम्ही से मुहब्बत करने का दिल में ख्याल आ गया

सोचा नहीं था ऐसे कोई दिल के करीब आएगा
जिन्दगी में दस्तक देकर नजर मुझही से चुराएगा
ये उल्फत की नई दास्तां दिल को मेरे भा गया
तुम्ही से मुहब्बत करने का दिल में ख्याल आ गया

एक तेरी मुस्कान पे दिल मैंने लुटा दिया
तुझे पाने का ख्वाब ख्यालो में जगा दिया
मेरे इस जवां दिल को एक हमराह मिल गया
तुम्ही से मुहब्बत करने का दिल में ख्याल आ गया

हम तुम बहारो में अब तन्हा मिलते रहेंगे
दीवानगी देख अपनी सारे चमन खिलते रहेंगे
चांद ही शरमा गई कि आस्मां पे घटा छा गया
तुम्ही से मुहब्बत करने का दिल में ख्याल आ गया

मेरी मोहब्बत में तुमको यकीन होने लगी
ये मुलाकात और भी हसीन होने लगी

मुश्किल से तन्हा कटी थी वो राते
जो कह ना सके तुम अनकही वो बाते
नजरो में तुम्हारे बयां होने लगी
ये मुलाकात और भी हसीन होने लगी

दिन जितने ही गुजरने लगे है
चाहते दिलो के बढ़ने लगे है
हर दूरियों में ये नजदीकियां लगने लगी
ये मुलाकात और भी हसीन होने लगी

तहजीब में उनकी आ गई खुदनुमाई
उल्फत के बंधनों में दिख रही उसकी परछाई
छुपा के प्यार खुद को सजा देने लगी
ये मुलाकात और भी हसीन होने लगी

मैं स्वयं अपने जरब युक्त हृदय का
मौन गीत नहीं सुन सकता
उन्हें पता हो भी तो कैसे
मेरी इसारत का हर ईट
जो मिट्टी के लोदियों से बने थे
इस सावन में
पूरी तरहा धुल चुका होगा
कहां भला संभव है
मेरे आने वाले
कल के नव अभिलाषा की
मेरे समक्ष
दूर दूर तक फैले बंजर में
दबे हुये
अनेको जीवन के नक्षत्र में
कोई गर्म हवां
अपने अदृश्य कर्तलो से
मुझको ढकेलती
मेरी आँखे बंद बंद सी
मेरे होठ चिपके हुये से
शायद कोई बहुत जोरो से चीखते हुये
मेरा पीछा कर रहा हो
समय का बोध जब सन्नाटे में
एक टीले से सत्कर
उसकी छांव में
अपनी थकान कम कर रहा मैं था

छांये करती थी पीछा
मेरे समक्ष हर समय
उनके ईजाद में
उबड़ खावाड़ रास्ते में
सुबह से शाम
उस समय भी मैंने
दिशा नहीं बदला था
उनकी आस्था के प्रति
जैसे कोई पालतू श्वान था मैं
उनके पद चिन्हों को
देखते सूंघते
चला जा रहा था पीछे पीछे
सर्दियों को छोड़कर
मैं विकल बरसात में
पंक और कंटकाकीर्ण पथ से
दोपल्ले खिड़की तक
भीतर अपने वस्त्रों को उतार
निचोड़ रही उस गुमशुदा का हाथ
थामा था बहुत जोरो से
मैं भूला नहीं
आज मेरी पूर्णमासी है
मिट्टी का कटाव
अभी थमा नहीं
ईंट गल गल कर मिल गई धरातल में
विचलित यातनाओ में समाहित
एकाकी एक सिकुडी आशा
अपनी
कोशिशों में निष्फल

अवनि से ऊपर
दो बूंद अश्रु
अपनी आँखों पर लिये
भटक रहा था इधर उधर
साथ लिये अपनी व्यथा
खुले आकाश से नीचे
अब मैं बाते नहीं करूंगा
ओंस की बूंदो से
गर्म हवां के झौंको से
हिम के कांटो से
सिर्फ स्मरण में रखूंगा उन्हें
मुझे विदित है
बहुत कठिन है ये सृष्टि
छोटी सी छोटी बातें
अर्थ प्यार का
बदल देगी फिर ।

साथ चलने का हौसला देकर दूर उन्ही से रहते हो
ऐतबार किसी का तोड़कर बेवफा उसे ही कहते हो ।।
इल्जाम नहीं ये गुनाह किया है तुमने
कत्ल जिसके दिल का किया मुजरिम उसे ही कहते हो ।।
हमसफर बनने की ख्वाहिश तुझे भी तो थी
फिर मुहब्बत की दास्तां जमाने से क्यूं कहते हो ।।
असर बेवफाई का इतना गहरा नहीं होता
बताते थे जिसे कभी अपना अभी गैर कहते हो ।।
बेदर्द तूने जिन्दगी में जख्म इतने भर दिये
दर्द होता है फिर भी ख्यालों में तुम रहते हो ।।

तू बिछुड़ा है जब से जिन्दगी वहीं पड़ी है
क्यूँ ये पलके ही तेरी राहों में पड़ी है ।।
ख्यालों में मिल जाते हो तुम एक तकदीर बनकर
कभी ख्वाब में आओ रात इंतेजार में जी रही है ।।
गुजर गया वक्त इतना लगता नहीं तुम मिलोगे
जी लेंगे तुम्हारे बिन जिन्दगी जितनी पड़ी है ।।
उनके फिराक में तुम बरसो क्यूँ रोये असीम
तमन्नता तो यही थी कि इक मुलाकात की पड़ी है ।।
दर्द तुमको भी होता इक बार मिल जाते कहीं
वक्त उम्मीदो में कट जाएगा यहीं जिन्दगी की कड़ी है ।।

तुम्हें देखकर दिल ये भरता नहीं
ले चलो हमें किसी जहां में कहीं

आँचल में तेरे मैं लेट जाऊं
आँखों में तेरे मैं डूब जाऊं
कर लू दो मन की बात कहीं
ले चलो हमें किसी जहां में कही

जुल्फों में तेरी मैं सिमट जाऊंगा
इश्क में तेरे मैं कहीं खो जाऊंगा
ये प्यार अपने हद से गुजर जाये कहीं
ले चलो हमें किसी जहां में कहीं

सावन के झूलों में झूलेंगे साथ हम
बरखा बहारो में कर लेंगे प्यार हम
फिर चाहे हो जाये बरसात कहीं
ले चलो हमें किसी जहां में कहीं

तुझे भुलाने की ख्वाहिशे
क्यूं तेरी राहो में फिर पलके बिछाने लगी

मैं तो तेरे इश्क में
इस कदर डूबा नहीं था
पर राह यूँ मुड़ जाएगी
मैंने कभी सोचा नहीं था
छूटकर भी सारी मंजिले
उम्मीद ऐसे जताने लगी
क्यूँ तेरी राहों में फिर पलके बिछाने लगी

मदहोशी में रोज मेरी
जिन्दगी होती है तबाह
जब से ख्यालो में मेरे
तू होती है जुदा
अब, सुबहो शाम तेरी
हसरतों में गुजरने लगी
क्यूँ तेरी राहो में फिर पलके बिछाने लगी

तेरे प्यार के अगन में
जल रहा है जिस्म मेरा
गर इरादा हो मुस्तकिल
मुझे पाने का तुम्हारा
न देर कर तुझे ख्वाब भी
बांहों में पाने लगी
क्यूं तेरी राहो में फिर पलके बिछाने लगी

एक मृत अनाथ
तुम्हारे पथ पर
सदियों की पंक्तियां लांघ कर
खोखली हसी हंसता
स्वयं
अपनी लाश ढोता हुआ
अंकित तुम्हारी राहो पर
तुम्हारे संकेतों से
तुम्हारे समीप
जीवन मरण की विचित्र सीढियों में
अपनी फटी छाया पर
तुम्हारे कदमो की
और तुम्हारी हंसी में
अपने उपहास के
कितने ही दशक मौन
प्रातः और संध्या
तुम्हें नहीं मालूम
एक उपेक्षा
एक विचित्र पागलपन
एक रिक्त जीवन की
मृत भावनाओं का,
कल्पनाओ के
एक असीम छोर से
एक शब्द
हमारे संबंधो की
एक स्मृति तो रख सकती हो
पलको से

स्वयं को इतना मत गिराओ
तुम्हारा अस्तित्व
अभी भी शेष है
प्रेम का कोई नाम
तुमने अभी नहीं लिखा तो क्या
जीवन की सभी दरारे
संबंधो के
अच्छे बुरे सपने
कितनी ही स्मृतियां होंगी
जहन में
जब क्षण भर को
आयु होगी शेष
तुम्हारी स्मृतियों के असीम पथ पर
तुम्हारे प्रेम का प्रतीक
सजल नय होंगे
मेरी आत्मीयता की
खामोश गवाह
तुम्हारी
श्रृति ।

करार था चलेंगे साथ साथ सब खाख बना दिये
छोड़कर वफा की राह जिन्दगी ख्वाब बना दिये ।।
तेरे प्यार में ऐतबार करके चले थे वफा की रहा में
तेरी बेवफाई ने हमारी जिन्दगी के गम बढा दिये ।।
सुकून कहीं मिलता नहीं वक्त परेशां करती है
आशिकी में जो तुमने हमसे फासले बढा दिये ।।
तुम अंजान हो तुम्हें अंदाज नहीं मेरे जख्मों का
तुम जुदा नहीं हुये हमसे हमारे दर्द और बढ़ा दिये ।।
अब और किसी के इश्क में हम बरबाद नहीं होंगे
तेरी बेवफाई ने लेकिन जिन्दगी को रास्ते नये दिखा दिये ।।

हम तो थे मुकम्मल सदा ही तुम्हारे पीया
तुम्हीं ने कहा था हमें तुम्ही ने भुला दिया ।।
राहे वफा में रात दिन ढूंढ रहा था तुझे
इक आस थी तुझसे बेवफाई ने भुला दिया ।।
कसमे वादो ने जो बनाए थे रिश्ते
सपने वो चाहतों के इरादो ने भुला दिया ।।
करीब तो आये थे हम चाहत की उम्मीद लेकर
गम यही है हमको तेरी फितरतो ने भुला दिया ।।
अब हमे तन्हाई में कोई दर्द ना होगा
जख्मों ने दिल से तेरी उल्फत को भुला दिया ।।

यूं आँखे न चुराओ नजर से हमारी
ये प्यार का समां ये अपनी दुनियां है सारी

सुहाने सफर में अगर रूठ जाओगे
ऐसे रंगीन मौसम का लुफ्त नहीं पाओगे
समझ लो ये खता फिर होगी तुम्हारी
ये प्यार का समा ये अपनी दुनियाँ है सारी

कह दो कि तुमको भी है प्यार हमसे
ये दिल्लगी ये मुहब्बत मैंने सीखा है तुमसे
ऐसे रूठे रहोगे जान जाएगी हमारी
ये प्यार का समां ये अपनी दुनियां है सारी

आ भी जाओ अब तुम पनाहो में मेरे
कि पल ये मोहब्बत का गुजारेंगे हम सारे
तुम मेरी जिन्दगी हो तुम दिलरूबा हमारी
ये प्यार का समां ये अपनी दुनिया है सारी

इस रात को ठहर जाने दो वक्त में बह जाने दो
प्यार की चाहतो में हद से गुजर जाने दो

दिल में तुम्हारे फासलो ने
दर्द कितने भर दिये
आज पाके तुमको बांहो में
होश हमने सब खो दिये
इश्क इक दीवानगी है
मंजिलों को पाने दो
प्यार की चाहतो में हद से गुजर जाने दो

आँखों में तस्वीर मैंने
तेरी ही सजायी
रूँह के मिलन का जबसे
तूने उम्मीद जगायी
जीवन का क्या भरोसा
आज तुम्हें पाने दो
प्यार की चाहतो में हद से गुजर जाने दो

मोहब्बत खुद अपने आप ही
मेहरबान हो रहा है
इश्क में जिस्मों जां से
कुरबान हो रहा है
मुझको तुम आज अपने
आगोश में आने दो
प्यार की चाहतों में हद से गुजर जाने दो

वास्तविकता से परे
प्रत्यक्ष नेत्रों का सत्यापन परिचय नहीं
मैं जानता हूँ स्वयं को
जिनकी हाथो की परिधि में
मैं कभी आया ही नहीं
भावनाओं से कलम की नोंक तक
अपनी रचनाओं में उन्हें...
मैं कभी साकार नहीं हुआ
मैं सफल हुआ हूँ
इस युग के अभिनय मंच में
अतीत से अब तक
मेरा प्रारंभ मैं नहीं जानता
और कहां होगा मेरा अंत
रोज ही तो मरता हूँ
आस्था से कुछ दूर हटकर
कोई स्वरूप साकार करता
जब मैं हूँ
मैं उन्हें छूकर भी तो
नहीं पा सका
क्या पता संलक्ष है या नहीं
और शायद इसीलिए
अपनी रचना का
अंत नहीं कर पाया हूँ
ये कोई अभिनय नहीं
मेरा निश्चय है
इस काल का सबसे अच्छा नायक
यदि मैं उनके वियोग में

घिरा हूँ
तो उन्हें भी
बांधना होगा
भावनाओ में खुद को
उन्हें ही अंत करना होगा
मेरी रचना इस काल का
प्रताड़नाओ में घिरा
कल्पनाओ के
अथाह सागर में
मातम ही लिखता आया हूँ
कविता में उनका आना जाना
और मंद मंद स्वर
जिसे संजोकर रखा था मैंने
नहीं मालूम
मेरा बसेरा
अब भी है या नहीं
जो नारी इंद्रियों को
स्पर्श करता था
वहीं हंसी वहीं दृष्टि
हर समय
देखता हूँ असफल
मैं जिस
चक्रव्यूह में घिरा हूँ
उससे भी अदभुत अपनी
खोखली हंसी को
मैंने कभी नहीं देखा
आँसू जो रिस्ते है
आँखों से
मुझे तो बहुत पहले ही मर जाना था

मेरे रगों में
उनका हास्य अभिनय भी तो है
या फिर
उनके आँसू पोछने के लिए
सृष्टि एक नाटक ही तो है
कभी हंसता है
कभी रोता है
मुझसे खोना नहीं
मैं दूर न होते हुये भी
परे क्यों हूँ
ये उनका
अभिनय हो सकता है
किन्तु मेरा मंच
उनको पाने का
मेरा आविष्कार ही होगा
मेरा शीर्ष

गर दिल से होगे तुम हमारे हम तुम्हारे ही होंगे
फासले और जिन्दगी में कभी कम न होंगे ।।
तरसेंगे सुलझने को उलझने रोज सारी
गर वास्ता ही न होगा रास्ते भी न होंगे ।।
कुछ लम्हा और जी लो हमसे नाम है तुम्हारा
तरसोगे जिन्दगी को जो कभी हम ही न होंगे ।।
याद कर रहा हूँ प्यार सलामत ही रहे हमारा
गर दम निकल गया तो ये हालात भी न होंगे ।।
उम्र गुजर भी जाये गर चाहत में तुम्हारे
खुशी तो नहीं होगी कोई गम भी न होंगे ।।

रूख्सत हुये दुनियाँ से और तुम आये नहीं
जीस्त में तुमसे झूठा किरदार हमने देखा नहीं ।।
ख्वाब दिखाए थे तूने साथ जीने का कभी
आँखों में साथ मरने का जुनून कभी देखा नहीं ।।
मुतमईन ये लोग सभी चेहरे का तासूर देखकर
हम दामन को तरसते रहे मगर तुम शरीक हुये नहीं ।।
कजा के वक्त भी शामिल तू न हो सका
आँखें राह पर पड़ी रही खाख जब तक हुये नहीं ।।
जिन्दगी में उसी लम्हा तड़पोगे तुम भी
जब निकलेगा दम तुम्हारा आँखों में हम होंगे नहीं ।।

जीवन को रौशन करता तुम उज्जवल वही सवेरा हो
बेचैन हूँ तुम्हारे बिना तुझमें बात ही ऐसी है

सुबह की किरणों सी तुम हो
रात की चांदनी भी तुम हो
आभास तुम्हारा मन में मेरे
हर क्षण ही ऐसी है
बैचैन हूँ तुम्हारे बिना तुझमें बात ही ऐसी है

वर्षा की हर बूंद में तुम हो
शीत के हर कण में तुम हो
तुमसे मिलने को उत्सुक मन में
ग्रीष्म ही ऐसी है
बेचैन हूँ तुम्हारे बिना तुझमें बात ही ऐसी है ।

रक्त की धारा में तुम हो
सांसों के हर लय में तुम हो
हलचल तुम्हारी धड़कनों में मेरे
हर पल ही ऐसी है
बेचैन हूँ तुम्हारे बिना तुझमें बात ही ऐसी है

जीवन के पतझड़ में भी
बसंत की सुगंध सी
दूरिया है थोड़ी जीवन में
तुमसे खुशियां भी ऐसी है
बेचैन हूँ तुम्हारे बिना तुझमें बात ही ऐसी है

इक बार तो प्यार जता दो
जिन्दगी तेरे हवाले कर दूंगा

मैं करता हूँ तुमसे मुहब्बत बेइंतेहा
इक बार तो अपना
दामन बढ़ा दो
तेरे आँचल में सारी
मैं दुनिया लुटा दूंगा
जिन्दगी तेरे हवाले कर दूंगा

तेरे दीदार को हर पल तरसते है नैना
इक बार तो रूख से
परदा हटा दो
ये पलके मैं तेरी
राहो में बिछा दूंगा
जिन्दगी तेरे हवाले कर दूंगा

तेरे ख्यालो में नजर आती है मंजिले
इक बार साथ जीने का
ख्वाब दिखा दो
वफा की राहो को मैं
फूलों से सजा दूंगा
जिन्दगी तेरे हवाले कर दूंगा

मेरे अथाह सीने में
एक ही सावन था
जो पलको से रिस गया
अब किसी का विरह
मैं विलीन नहीं हूँगा
बहुत रोया एकांत उनके इंतजार में
कितनी ही शाम ढल चुकी
मैं दग्ध अधरो पर उनका नाम लिये
भटक रहा था इधर उधर
मेरी व्याकुलता मेरी अनुभूति
मेरी आशाओं से मेरी कल्पनाओ के
अथाह सागर में बह गई
उसका जन्म
मेरी भावनाओ में मेरी इंद्रियो में
अब भी होता है
वो सावन आया ही क्यों था
और किसलिए
मेरी जिज्ञासा
उनको जानने का
शायद इस बरस जान लूंगा
फिर सावन के
आगमन से

ठहरा हुआ है दिल तुम्ही पे सुकून हमें मिलता नहीं
उजड़ गये मेरे आशियाने मगर तू दिल से निकलता नहीं ।।
मुझको मिला सौगात ये तोहफा इक अजीब सा
हमराह बना वही मेरा जो मुझसे प्यार करता नहीं ।।
जिस मोड़ पर मेरे कदम रुक जाते थे कभी
बेबसी कि उस राह पर अब कदम मुड़ते नहीं ।।
आँखों में छुपी हुई तस्वीर दिल में उतर गयी
प्यार ही तो करता हूँ उसे जो हुआ कभी हासिल नहीं ।।
दीवानगी तो हद है असीम क्यूँ करता है प्यार किसी से
आसान है बेवफाई मगर वो तुझे आता नहीं ।।

जिन्दगी के फैसलो में तू होना नहीं नादान
जो लिखे तकदीर अपनी वही है इंसान ।।
जिन्दगी का एक रास्ता यही अमल करना
जो सभी से प्यार करे वो होता नहीं परेशान ।।
दुनिया छोड़ जाएंगे हम उम्र कट ही जाएगी
इस बात को जो ना समझे वो नहीं इंसान ।।
पाने की तमन्ना तो है हर दिल की दास्तां
देने का हौसला रखो होगा अच्छा हर अंजाम ।।
प्यार करने वाले जख्म सभी सह लेंगे
बेवफा से दिल लगाकर दर्द से नहीं होते अंजान ।।

चार दिनो की बात है
ये पहली मुलाकात है
जबसे देखा तुमको
कसम से प्यार हो गया

ढूंढ रहा था गली गली
एक चुलबुली सी मनचली
मुझे देख तेरा मुस्कुराना
दिल के पार हो गया
कसम से प्यार हो गया

कटते नहीं थे तुम्हारे बिन
तन्हा मेरे ये रात दिन
जिन्दगी में तेरा आना
दिल का करार हो गया
कसम से प्यार हो गया

मुहब्बत भी क्या चीज है
दिल को लगती ये लजीज है
देखकर तुझे ऐ गुलबदन
पाने को बेकरार हो गया
कसम से प्यार हो गया

हम दोनों ही अंजान है
मगर चाहतों पे मेहरबान है
एक दूजे में हम दोनों को
ऐतबार हो गया
कसम से प्यार हो गया, कसम से प्यार हो गया

ये राहे है प्यार के हमसफर पे यकीं करना
ये बंधन है दिलों का दिल पर ऐतबार करना
साथ चलना हो जिन्दगी में खत लिखके बयां करना

तुमको खुदा का वास्ता
तुमने कहा था प्यार है मुझसे
खुशनुमा सी जिन्दगी होगी
तुमने कहा था बहारो में मुझसे
जो वादा किया प्यार में मुझसे
खत में वही इकरार करना
साथ चलना हो जिन्दगी में खत लिखके बयां करना

जो आस दिल में दबीं है
उसे हकीकत बन जाने दो
जो रूह की तमन्ना है
उसे मुहब्बत में खो जाने दो
एक दूजे के होकर रहे
तुम ये दिल से दुआ करना
साथ चलना हो जिन्दगी में खत लिखके बयां करना

दीवाना हूँ तेरे इश्क में
तुझपे ही मरना चाहता हूँ
अपने जिस्म को छोड़ तेरी
धड़कनों में रहना चाहता हूँ
मुझको तुम साँसो में जगह देकर
चाहत का कर्ज अदा करना
साथ चलना हो जिन्दगी में खत लिखके बयां करना

आज उन राहों से गुजर आया हूँ
जिन क्षणों की मात्र
यादे ही
रह गयी है जहन में
कदम आज लड़खड़ाते नहीं
बल्कि सम्हल गया हूँ
जब कभी
बरसात होती है
हसरतो के बदलते मौसम में
मैं स्वयं
राह बदल लेता हूँ
जहां मेरी
एक एक स्मृतियाँ
मेरे मृत सपने
मौन मेरे इंतजार में
खोया हुआ होता है
शमशाम की तरहा
स्तब्ध
कल्पनाओं में थी
मूक जीवन की
आधार शिला
जीवन का शृंगार
अब खत्म हुआ
देह कब्र में खोता है
मैंने
आत्मा को
सूखे पत्तों और तिनको का

कफन दिया
कभी सरका उसे
देख लेता हूँ
तो कभी ढाप लेता हूँ उसे
वेदना के
करूण रसों में घिरा
निर्जीव शरीर
विलीन कभी उनमें
कभी बीते क्षणों में होता है
मैं आत्मीयता को
त्याग नहीं सका
मेरी मुश्किलों का उन्हें
पता होता भी तो कैसे
लेकिन उनका प्रतिशोध
कैसा और किसलिए
उम्र ही ढल गयी
क्या यही है
पश्चाताप ।

जुदा हो हमसे मगर हसरते दिल में है सभी
फासले नहीं है इतने याद आये हो अभी ।।
ख्वाब में तेरे प्यार का असर रहता है रात भर
हर जगह तू शामो सहर नजर आता है अभी ।।
सोच रहा हूँ दिल में मायूसी क्यू छा गयी
ख्यालो में आया मेरे बिन कहे गया अभी ।।
तन्हा है आशियां मेरे बिन तेरे गलियाँ मेरी
सजनी तेरे बिन कही दिल नहीं लगता अभी ।।
आँखों में रहते हो बनकर इक तस्वीर तुम
अब रात भी हो गई तू आँखों में ठहरा अभी ।।

तुम हौसला तो जगाओ ख्वाहिशों को जिन्दगी मिल जाएगी
रास्ते भी हो जाएंगे मुनासिब मंजिल भी मिल जाएगी ।।
जिस्म धोखा है इक दिन मिट्टी में मिल जाना है
मुहब्बत करना सीख ले ये चीज यही रह जाएगी ।।
प्यार करो बेइंतेहा पाने की चाह न रखना तुम
खो जाएंगे गम के रास्ते हर खुशी तुझे मिल जाएगी ।।
इबादत कर ऐतबार से कर ले जो फरियाद तेरी
खोया है जिसे तूने कभी वो तुमको मिल जाएगी ।।
जिन्दगी तुझे मुहब्बत के जज्बातों में जीना है
गर मेहबूब ही हमसफर हो ये जहान मुझे मिल जाएगी ।।

तेरा एहसास मुझको इसकदर सताएगी
तेरे ख्यालो में हर पहर बीत जाएगी

सहता रहा हूँ सितम मैं जमाने का
तोड़ दी जो तूने कसम साथ निभाने का
तेरे लिये ही उल्फत बदनाम हो जाएगी
तेरा एहसास मुझको इस कदर सताएगी

सपनो का बंधन था हमारा छूट गया
एक प्यार भरा आशियाना ही टूट गया
कम्बख्त तेरी हसरते ही मुझे तड़पाएगी
तेरा एहसास मुझको इस कदर सताएगी

तन्हाई भी किसी तरहा जी लेते थे हम
जुदाई का दर्द भी पी लेते थे हम
खुदनुमाई में जिन्दगी पेरेशां हो जाएगी
तेरा एहसास मुझको इस कदर सताएगी

अब न चाहतो का फसाना रहेगा
कैसे बेकरारी में ये दीवाना रहेगा
एक तेरे तसव्वुर में मेरी जान ही जाएगी
तेरा एहसास मुझको इस कदर सताएगी

वफा का सिलसिला न खत्म होगा हमारा
जिन्दगी भर रहे मोहब्बत का सहारा
न रहे दूरियां कभी मैं रहूँ संग तेरे
तुम मिलो हर जन्म मुझे ही दोबारा

तेरी तस्वीर से दिल बहलता नहीं
मिल न सकूं तो दिन ही ढलता नहीं
दिल तड़पता है और कहता है मुझको
ये गम नहीं है प्यार है तुम्हारा
तुम मिलो हर जनम मुझे ही दोबारा

तुम ही न आते हो इंतेजार मैं करती हूँ
हर तसव्वुर तुम्हारा हर सांसों में बुनती हूँ
मुझे तुम्हारी उल्फत में इकरार हो गया
किसी जनम ये बंधन न टूटे हमारा
तुम मिलो हर जनम मुझे ही दोबारा

गर रहे खुश जमाना छीनकर मेरी खुशी
ये उम्र मैं गुजारूंगा रहकर यादों में तेरी
खो सकता नहीं मैं ना भुलाऊंगा तुझे
जी लेंगे हम लेकर तेरी यादों का सहारा
तुम मिलो हर जनम मुझे ही दोबारा

तेरी तलाश है मुझे
दिल तेरा चुराना है
अपने जिस्म में साथ तेरे
छोटा सा घर बसाना है
ख्वाब जो देखे है हमने
हकीकत उसे बनाना है
उल्फत के इन फूलों से
इस गुलशन को सजाना है
अपने जिस्म में साथ तेरे
छोटा सा घर बसाना है
तुम्हे रूह में महसूस करके
मासूम दिल को बहलाऊंगा
तमन्नाओं के इस महल में
एक और जिन्दगी जगाना है
अपने जिस्म में साथ तेरे
छोटा सा घर बसाना है

उल्फत का जमाना हमको याद आ गया
दीवानगी का समां फिर आंखों पर छा गया
उल्झने ही आती रही प्यार में हमारे
भंवर में टूटी हुई कश्ती मुझे दिखा गया ।।
बीता हुआ पल कभी आया नहीं लौटकर
मगर जिन्दगी है उनके आगोश में ख्वाब मुझे दिखा गया ।।
खत जो दिया था तूने सिर्फ अपना नाम लिखकर
कितना तू भी तन्हा होगा मुझको ये समझा गया ।।
रास्ते ही बिखर गये हमराह ही न बन सकें
भंवर ही में रह गये हम साथ जो हमारा छूट गया ।।

तुमने जो प्यार से हमको गले लगा लिया
तेरे दामन में मरने का लुफ्त मैंने उठा लिया ।।
रात दिन जब तुम मुझे ख्यालों में आने लगे
तुमसे अपनी मोहब्बत का इजहार मैने कर लिया ।।
मुद्दतों के बाद तुम मेरे हमराह हो गये
मुश्किल था कितना ये सफर आसान तुमने कर लिया ।।
साथ जीने मरने का करार जो था तुमसे
हम सफर तुझे बनाना तय दिल ने कर लिया ।।
दायरे थे बंदिशे थी मुहब्बत के रास्तो में मगर
मिलने का हौसला था जो हमने तुमको पा लिया ।।

Male- सावन की फुहारो में
बूंदो की बहारो में
तेरा ये भीगा बदन
अगन लगा रही है

Female- ये सुहाना मौसम भी
मेरे भीगे यौवन में
शर्म की हद तोड़कर
प्यास जगा रही है

M- बरसात की बूंदो ने
कर दिया मुझे दीवाना
महदोश कर रहा है
तेरे इश्कका पैमाना
तुझे पाने की चाहते
दिल में सुलग रही है
तेरा ये भीगा बदन
अगन लगा रही है

F- मैने कर ली बंद आंखे
तुम्हारी पनाहो में आके
आज पीया ने जी लिया
मुझे अपनी बांहों में पाके
ये प्यार का समां
हमको पास ला रही है
शर्म की हद तोड़कर
प्यार जगा रही है

M- ये बेकसी का आलम
जाने क्या हुआ

F- चमक रही है बिजलियाँ
तुमने जो मुझे छुआ

M/F- भूल कोई हो जाये ना
हमको डरा रही है

M- तेरा ये भीगा बदन
अगन लगा रही है

F- शर्म की हद तोड़कर
प्यार जगा रही है

तेरी आहटो से महसूस हुआ धड़कनो में बसे हो
ख्यालो की दुनिया में साथ हमसफर बनके चले हो

रहता है रूप तुम्हारा
दिल में हर पल मेरे
सांसों में रहती हो तुम
हम जुदा है बिन तेरे
लगा है मुझे ऐसे
साथ कही तुम हो
ख्यालो की दुनियां में साथ हम सफर बनके चले हो

फूलो सा चेहरा है तेरा
कलियों से होंठ है तेरे
सुबह की किरणे है तेरी काया
हिरणी सी है आँखे तेरे
लहरो की रागिनी हो तुम
बहारो में तुम्ही हो
ख्यालों की दुनिया में साथ हम सफर बनके चले हो

पल में गुम हो जाते हो
नींद मेरी ले जाते हो
है रोज के सिलसिले ये
सपनो से खो जाते हो
तुमसे है जिन्दगी मेरी
तुम ही मेरी तमन्ना हो
ख्यालों की दुनिया में साथ हमसफर बनके चले हो

छाँव तले रहकर छत तलाश रहा हूँ
न चाहकर भी खुशियों का चमन त्याग रहा हूँ

जहाँ मेरे बचपन और लड़कपन की है यादें
माता पिता की गोद और संरक्षण की वो बाते
सारा जीवन समर्पण की थी जहाँ मेरी आशा
अपनों के ही क्लेश में खोता जा रहा हूँ

मन है विचलित मेरा सोचा ना था कभी
ऐसा भी दौर आएगा जो घटा है अभी
उल्झन में हुँ कहुँगा क्या स्मरण में उन्हें
ममता के आंगन से जो छूटा जा रहा हूँ

उनकी छाँव से परे क्या सुख है कहीं
रूह जहाँ दुखता हो दुख है वहीं
किस सुख की खातिर हर पहर भटक रहा हूँ
न चाहकर भी अपनी आँखों में खटक रहा हूँ

जो माटी मेरी मथुरा भी है वृदावन भी
जीवन यही गुजरेगी आशा की थी ये मन भी
जहाँ से मुझको था श्याम के घर जाना
सांसरिक कोलाहल में छोड़े जा रहा हूँ

माटी सोना जागीर सब यहीं रह जाएगा
वर्तमान में जी ले भविष्य धरा रह जाएगा
फिर भी उसी की चाह में जी रहा जहान है
मैं अपना जीवन जहाँ अर्पित किये जा रहा हूँ
न चाहकर भी खुशियों का चमन त्याग रहा हूँ

इल्जाम फासलो का तुझ पर हम नहीं लगाते
तुमने ही कहां था प्यार तुम नहीं करते ।।
एक जख्मे दिल को और जलाने के वास्ते
अपने प्यार का इजहार तुम नहीं करते ।।
छुपकर देखने की आदत जो है तुमको
सामने से दीदार किसी का तुम नहीं करते ।।
किस्मत की लकीरों में गर जुदाई का गम हो
किसी जज्बात की परवाह कभी तुम नहीं करते ।।
ठिकानों पर मिलने कभी तुम आते ही नहीं
और कहते हो इंतेजार किसी का तुम नहीं करते ।।

तुम्हारे बिना रात दिन याद जो तुम्हारी आती रही
तन्हाई का दर्द हमको हर लम्हा जगाती रही ।।
मुश्किल है इंतेजार में जीना और इस कदर
ख्वाब बनके तुम मेरी आँखों में जो आती रही ।
गली गली शहर शहर मैं तुझको ढूंढता रहा
जब कभी ख्यालो में तुम मुझे रुलाती रही ।।
खो गये हो तुम कहां किस जहां में मेरे बगैर
बस तेरे ही गम में बरखा आँखों से बरसती रही ।।
जख्म जो मिले मुझे तेरी उल्फत में इस कदर
भुला नहीं सकी तुझे बस दर्द ही सहती रही ।।

मेरी इन सदाओ को तुम भुला न पाओगी
रोक लो ये घड़िया फिर लौट के न आयेगी

सांसे है अनगिन मगर छोटी है जिन्दगी
अनजाने इस पल में ढूंढनी है हर खुशी
इस पल को तुम जी लो वरना छल के जाएगी
रोक लो ये घड़ियाँ फिर लौट के न आयेगी

एक दूसरे की पनाह में ये जीवन संवर जाएगा
हम दोनों के प्यार से ये बाग चमन हो जाएगा
तुम साथ हो तो जिन्दगी में फिर बहार आ जाएगी
रोक लो ये घड़ियाँ फिर लौट के न आएगी

आ ना जाए पतझड़ इक दिन आये ना वो रात कभी
आँखों में आँसू हो दिल में हमारे जज्बात भी
चाहकर भी सांसो को फिर वक्त रोक न पाएगी
रोक लो ये घड़ियाँ फिर लौट के न आएगी

मंजिलों के दरमयां कितने फासले हो गये
तुझे ढूंढते रहे हम तुम जाने कहां खो गये

इक साया है आँखों में
दिल में है तस्वीर
ख्यालों में तुम्ही हो
आँखों में है नीर
तसव्वुर में ऐसे कुछ अरमान महका गये
तुझे ढूंढते रहे हम तुम जाने कहाँ खो गये

बिखर न जाये कही
सपनों का आशियाँ मेरा
टूट न जाये कही
प्यार पर ऐतबार मेरा
तुम तन्हा हमें छोड़कर जुल्म कैसे कर गये
तुझे ढूँढते रहे हम तुम जाने कहाँ खो गये

जख्म जो तूने दिये
अभी भरा नहीं हमारा
दर्द सम्हलता ही नहीं
साथ पाना जो था तुम्हारा
जो साथ गुजारी थी हमने
वो दिन याद आ गये
तुझे ढूंढते रहे हम तुम जाने कहां खो गये

मैंने देखा है पथ पर
हर दिन हर रात
मरने वाले उस जीव को
स्वतंत्र फिर भी हर तरह से अपंग
जन समूह पर आश्रित
अश्रुपूरित उस बेहाल जीव को
मैंने देखा है पथ पर
अवाम ने बिठा रखा है
कुछ और सांसों का लक्ष्य लिये
अपने हाथों को फैलाए जीवन से निराश
उस जीव को मैंने देखा है पथ पर
उसका अज्ञात भविष्य उसकी वेदना
मृत्यु से भी भयंकर
उसका व्यर्थ जीवन हर सुबह हर सांझ
बरसो कराहते उस जीव को
मैंने देखा है पथ पर
आँखों पर धूल झोकते
चिथड़ियों से सुसज्जित उसका देह
गर्म हवा के झौको में
चुभते ओलों में हिम के कांटों में
मैने देखा है पथ पर
अच्छा ही हुआ
जन्मांध पीड़ित
आजीवन उसकी संवेदना उसकी प्यास उसकी तड़प
उसका आह्वान उसी अभ्यर्थना
अज्ञात उसका अंत
मैंने देखा है पथ पर

बेकरारी में जीना और दुश्वार हो रही है
वजह कम्बख्त जमाना है जिन्दगी परेशां हो रही है ।।
कह कर ही जाते हो जल्द आओगे लौटकर
इंतेजार में तुम्हारे जैसे इंतेहा हो रही है ।।
प्यार नहीं करते हो तो कह दो हमारी जुबां पर
ये जिन्दगी तेरे नाम से बरबाद हो रही है ।।
बख्श दो मुहब्बत में गरकोई खता हो गई
सुबह का भूला हूँ अब शाम हो रही है ।।
सफर ये उल्फत का नहीं कटेगा इस तरहा
नजरे पड़ी है राहो में बस उम्र ही जा रही है ।।

सिवा तेरे प्यार के तन्हा दिल की कोई आरजू नहीं
तू गया जो मुझे छोड़कर दिल की कोई जुस्तजू नहीं ।।
दिल में शम्मा जलाकर ढूंढ रहा हूँ मैं किसे
मिट गए अरमान सारे आशियां कोई बचा नहीं ।।
उम्मीद थी जिससे मुझे की उसी ने बेवफाई
इख्तियार प्यार का टूट गया अब दिल कही झुकता नहीं ।।
लिख रहा हूँ कागज पर मुझे अब नहीं है डर
जख्म जो उसने दिया वो दर्द मुझसे छुपता नहीं ।।
हम तो गुल है जो गुलशन में खिले रहेंगे सदा
हमने किया है प्यार दिल से मजा छुपाने में आता नहीं ।।

रुसवाईयां मुझको तेरी जीने नहीं देती
ना होके भी साथ तेरा मरने नहीं देती

लहराती आँचल के नीचे
फूलो सा तेरा दामन
ख्यालो में रात कोई
मुझको सोने नहीं देती
ना होके भी साथ तेरा मरने नहीं देती

तेरी आँखों में इतना
मेरे प्यार का है नशा
कोई जाम तेरे होठो के बगैर
पीने नहीं देती
ना होके भी साथ तेरा मरने नहीं देती

ख्यालो में पाने की
जो आदत हो गई हमको
दिल के जज्बात तुमको
भुलाने नहीं देती
ना होके भी साथ तेरा मरने नहीं देती

तुझसे रोज बिछड़ने का यही था आलम
तेरे बाँहों में सर रखके रोते थे हम
इन फासलों की ये बरसात
आँखों से रुकने नहीं देती
ना होके भी साथ तेरा मरने नहीं देती

चाहतो के समंदर में पाया है तुम्हें
उल्फत ने ख्यालों में लाया है तुम्हें

तन्हा है जीवन मेरा इक तुम्हारे बिन
वक्त ने लिया जैसे मेरा हर पल छिन
जीवन के हर पन्नो में सजाया है तुम्हें
उल्फत ने ख्यालों में लाया है तुम्हें

तुम्हीं से जिन्दगी रंगों सी निखर गयी
जीने की इक तमन्ना दिल में उभर गई
बहारो से मैंने चुराया है तुम्हें
उल्फत ने ख्यालों में लाया है तुम्हें

जीवन की कश्ती और किनारा तुम हो
साहिल में हमारा सहारा तुम हो
मुहब्बत के भंवर में पाया है तुम्हें
उल्फत ने ख्यालो में लाया है तुम्हें

रुसवाईयों की परवाह हम नहीं करते
मेरी उल्फत हर लम्हा तुमको सताएगी
आकर मुझमें समा जाओ मुस्तकिल के लिये
ये दुश्वार मोहब्बत वजहेशान हो जाएगी ।

खुदनुमाई का मंजर ऐतबार में बदल जाएगा
हर लम्हा जिन्दगी को सुकूं कर जाएगा
आतिशे हरीफो की गौहर में बदल जाएंगे
हर एक आस्मां कहकशां हो जाएगी ।

अय्याम पाक मोहब्बत में नजर मत डालो
ये मुनव्वर उल्फत की करिश्मा कर जाएगी
ये सरफराजे असीम मुहब्बत जियाबार हो जाएगा
खुदा की हर नवाजिश खुलूसे लम्हा जो जाएगी ।

जिन्दगी को तुम तसव्वुर में बदलकर देखो
शामो सहर मसर्रत ख्वाबकासा नजर आएगी
राहे वफा में रहमोकरम गर है दिल में तेरे
हर फरियाद में ये जिन्दगी शादाब हो जाएगी ।

वफा की राह में गर प्यार उनसे बेइंतेहा करेगा
इक रोज उनको भी तुममें प्यार आ ही जाएगा ।।
जीया है तूने अभी वक्त बड़ी तन्हाई में
कुछ लम्हा और इंतेहा का पल भी गुजर जाएगा ।।
कटेगी न उम्र उनकी सुकून से तेरे बगैर
रखना दिल में हौसला पास तेरे वही आएगा ।।
गम इसमें नहीं कि कभी उसे मैं न पा सकूं
दर्द है कि वो मुझे कभी भुला नहीं पाएगा ।।
ये दुनिया अगर उल्फत के सिवा कुछ नहीं
किसी जिन्दगी में वो इक दिन बहार लेकर आएगा ।

दिल से तुझे भुलाना जितना हुआ मुश्किल
भुलाकर भी खुद को समझाना हुआ मुश्किल ।।
देखकर हमें राह में पूछ रहा हर कोई
जमाने से तुझे छुपाकर चलना हुआ मुश्किल ।।
राह में तुझे छोड़ना जितना नहीं था आसान
तेरे बिना साथ तुम्हारे चलना हुआ मुश्किल ।।
बेवजेह ही हो गई हसरते ही जब हमारी
मुस्कुराकर तेरे बारे में कहीं कहना हुआ मुश्किल ।।
आँसू ही बहते है अभी तुझसे जुदा होकर
तेरे पैमानो के बगैर मेरा पीना हुआ मुश्किल ।।

सदियों के जख्म मेरे दर्द बनके उभर आयी है
तोड़ गया आशियाँ मेरा तू मेरे हरजाई है

जमाने से आँखों में तेरी तस्वीर ही बुनती रही
किसी जनम मिल जाओगे दिल को मैं समझाती रही
थाम कर दिल अपना प्यार तुझपे ही लुटाई है
तोड़ गया आशियाँ मेरा तू मेरा हरजाई है

मुझको तुम मिल जाओगे दिल को इक तसल्ली थी
ढूंढती रही मैं हर जहाँ हर गली मैं चली थी
पुकारा मैंने जब भी तुमको पाया वही तन्हाई है
तोड़ गया आशियां मेरा तू मेरा हरजाई है

मोहब्बत के हद से गुजरती रही हूँ हरदम
कितने ही जनम तेरे प्यार को तरसती रही हूँ हरदम
मुद्दतों का जख्म तुझको खोकर ही मैने पायी है
तोड़ गया आशिया मेरा तू मेरा हरजाई है

आशिकी है इस कदर तेरी
मोहब्बत में दीवाना हो गया हूँ

तुमसे ही ख्वाब सजाया हमने
दिल में इक चमन बनाया हमने
तेरे ही ख्यालो में खो गया हूँ
मोहब्बत में दीवाना हो गया हूँ

नजर आते हो इस तरहा
झील में चाँद हो जिस तरहा
तेरे दीदार में आज मैं खो गया हूँ
मुहब्बत में दीवाना हो गया हूँ

तुम दिल में इस तरहा बसे हो
हरेक मंजर में आशिकाना लगे हो
बहारों में मैं साथ तेरे खो गया हूँ
मोहब्बत में दीवाना हो गया हूँ

हंसाते ही नहीं सताते हो तुम
ख्यालों में प्यार जताते हो तुम ।।
दर्द तेरी तन्हाई का देखा है मैंने
ख्वाबों में भी अश्क जो बहाते हो तुम
दायरे और बंदिशे तुम्ही ने बनाई
क्यूँ जमाने को जालिम बताते हो तुम ।।
हर दर्द मुहब्बत का हंसकर सहता हूँ
मंजिल कोपाने का जो हौसला हो तुम ।।
एक बार मिलने करीब आकर तो देखो
फासले नहीं है मेरे दरमयां हो तुम ।।

जिस तरहा वो हमे सुबहो शाम परेशां करते है
फिर उनके ख्वाबो में हम क्यूं नहीं आते है ।।
प्यार की राहों में हम नहीं रहते उनसे जुदा
कसम से मगर कातिल को हम समझ नहीं पाते है ।।
उन पर तो आशिकी का कोई असर नहीं होता
हर मोड़ पर जिनमें हम अपना प्यार लुटाते है ।।
मिलते है राहो में मगर प्यार से देखते भी नहीं
बस मुस्कुराके शर्म से वो नजर ही चुराते है ।।
ये प्यार की दास्तां है ये कोई खिलौना नहीं
हम उनकी चाहत में अपना दिल जो जलाते है ।।

तन्हाई के पल ये कितने हमको करीब लाती है
सारी दुनियाँ भुलाकर मुझे तेरी याद दिलाती है

जब ख्यालो में होता हूँ
तुमसे ही बात करता हूँ
आँखों में तस्वीर बनाकर
तेरे दामन में सो जाता हूँ
यही एक झूठी दुनियाँ
हर वक्त मुझे सताती है
सारी दुनिया भुलाकर मुझे तेरी याद दिलाती है

जमाने गुजर गये फिर भी
आज हुआ सा लगता है
हर शौक दिल से हरा है अभी
बस तू जुदा सा लगता है
सपने भी सजते है तुझसे
तू ख्वाबों में होता है
सारी दुनियां भुलाकर मुझे तेरी याद दिलाती है

तेरे प्यार के साये में
आशियां कितने बनाये हमने
हर रूप में हर रंग में
खुशियाँ जहाँ सजाये अपने
टूट गये वो शीश महल
हर टुकड़ों पर तू दिखती है
सारी दुनिया भुलाकर मुझे तेरी याद दिलाती है

वक्त ही गुजरता रहा आँखे ढूंढती रही तुम्हे
हुये थे जहाँ हम जुदा जिन्दगी वही थमी रही

तेरी उल्फत में न जी सका
कभी जख्मों को न सी सका
तेरे गम में तेरे दर्द में
जिन्दगी यूं ही जलती रही
हुये थे जहाँ हम जुदा जिन्दगी वही थमी रही

एक दूसरे पे हम फिदा हुये
न चाहकर फिर जुदा हुये
तड़प रहा था दिल मगर
होठ फिर भी मुस्कुराती रही
हुये थे जहाँ हम जुदा जिन्दगी वहीं थमी रही

मुश्किलों से किया था हासिल
एक तुम ही थी मेरी मंजिल
तुम ही तो थी मेरी तमन्ना
तुम ही ख्यालों में आती रही
हुये थे जहाँ हम जुदा जिन्दगी वही थमी रही

भूल नहीं पाया तुमको
तुम याद आती रही हमको
दिल में हमारे प्यार की
इक शम्मा ही जलती रही
हुये थे जहां हम जुदा जिन्दगी वही थमी रहीं ।

तन्हाई में हर पल तेरी
तस्वीर दिल में बनती रही
इन आँखों में तुझे देखने की
ख्वाहिशे ही बढ़ती रही
हुये थे जहाँ हम जुदा जिन्दगी वही थमी रही ।

अंजाम मुहब्बत का कभी रुखसत न हो
मेहरूम मुझसे तेरी उल्फत न हो ।।
तुझको भी बस मेरी तमन्ना रहे
तुम भी मेरे बिन कही तन्हा न हो ।।
जी नहीं सकते कहीं हम तुम्हारे बगैर
ये बात कही जमाने के दरमयां न हो ।।
चलो अपनी मंजिल हम वही बनाये
प्यार में जहां कोई पहरे न हो ।।
उल्फत में जमाना छोड़ना पड़े भी तो क्या
रुसवाई में जी लेंगे मगर हम जुदा न हो ।।

फिर वहीं शाम खामोश है तन्हाई
ख्याल जो आये हो तुम सबब है जुदाई ।।
आँखें तरस रही बेकरारी है फिर ख्वाब का
कसम से साथ तुम्हारे कल रात हमने बितायी ।।
जुदा हो गए हम दोनो तन्हा हुये हम तुम
जब साथ ही न रहा तो फिर कैसी रुसवाई ।।
तड़पेंगे हम तुम्हारे बिन हमको ये महसूस हुआ
जो कसमे हमने खाई थी वो याद हमें भी आयी ।।
जितने हम करीब थे दूर हुये है उतने
मगर क्यूं हम जुदा हुये ये कैसी थी बेवफाई ।।

तुम्हारी खामोशियों में कर भी लूं गर यकीं
ये तन्हाईया मुझे जीने नहीं देती

ना शिकवा है ना गिला कोई
तेरी आरजू में हूँ मैं खोई
शिकायत है तो कह दो जरा
ये इंतेजार मुझे जीने नहीं देती
ये तन्हाईयाँ मुझे जीने नहीं देती

मैं यकीनन तुझे प्यार करती हूँ
तेरे नाम से ही दम भरती हूँ
मुझको दे दो तुम बाहों का सहारा
ये मुहब्बत मुझे जीने नहीं देती
ये तन्हाईयां मुझे जीने नहीं देती

हो गये कहाँ मेरी नजरो से गुम
ले आओ बहार मेरी जिन्दगी में तुम
नहीं होता अब रात पर ऐतबार
ख्वाब भी सुकून से मुझे जीने नहीं देती
ये तन्हाईयाँ मुझे जीने नहीं देती

उनको ही है इंतेहा से गुजरना
देखना है खुदनुमाई का क्या होगा फसाना ।।
हुस्न की रंगत और फितरत ही न समझा अगर
तन्हा जी ले बेहतर है इल्जाम किसी पे न लगाना ।।
जीने की तरकीब एक तुम भी आजमा लो
जीने का मजा लो बनाओ आशिकी को बहाना ।।
उनको वक्त ही होता है प्यार की नुमाईश का
वो फिरते है गलियों में बस बनकर दीवाना ।।
गर दिल लगा बैठा है किसी बेवफा से
सम्हल जिन्दगी बीत जाएगी रह जाएगा बेगाना ।।

जिन्दगी भर मेहफूज रहे तुझको मगर पाया नहीं
हम तुझे प्यार करते रहे तू कभी आया नहीं ।।
एक तू ही था मेरे दिल के इतने करीब
मुझे तुझपे इख्तियार था मगर तूने निभाया नहीं ।।
फासलो के दर्द भी कितने अजीब होते है
आँखों में ही सूख गये हमने कभी देखा नहीं ।।
हसरते है साथ मेरे पहली बार जो की थी वफा
दिलबर बना न कोई अपना तन्हा भी हुये नहीं ।।
लुटकर भी प्यार तुमसे करते रहेंगे बोहत
दर्द हमें ही होगा तुमने तो जख्म खायी नहीं ।।

जन्मो का सिलसिला है तुम ही कहते हो
तुम बनके ख्याल दिल में रहते हो ।।
फासलो में भी सुकून है इतना
तुम बहारो में खुश्बू की तरह बहते हो ।।
उल्फत में दायरे ही बनते है क्यूँ
तुम तो हमेशा दिल में रहते हो ।।
गर रुख्सत होने का एहसास नहीं तुम्हें
फिर दर्द जुदाई का तुम क्यूँ सहते हो ।।
तमन्ना तुम क्यूं नहीं करते बयां हमसे
और हमारे बगैर जिन्दगी भी जीते हो ।।

मुझे जीने की चाहतो ने तुमसे मिला दिया
मोहब्बत क्या होती है हमको सिखा दिया ।।
तुम आये न आये ख्यालो में रहते हो
मुश्किलों में उल्फत ने हमको जीना सिखा दिया ।।
सलामत रहो तुम सदा ये दुआ करते है हम
हमको तुम्हारी चाहतो ने क्या क्या करना सिखा दिया ।।
फासलो में भी तुम ख्वाबों में इस तरहा आते रहे
दायरो ने और बंदिशो ने तुमसे मिलना सिखा दिया ।।
पास न होके भी हमसे तुम इतने हुये करीब
फासलो ने मुहब्बत का असर हमको दिखा दिया ।।

प्यार में तेरे दिल लुटा बैठा हूँ
उम्र ही अपनी गवां बैठा हूँ ।।
जख्मो का जो डर है जमाने से
फासले ही तुमसे बना बैठा हूँ ।।
मंजिल मुझे पाना है साथ तुम्हारे
काँटो में राह बना बैठा हूँ ।।
जिन्दगी साथ जीने की गुजारिश है तुमसे
खुदा जो तुमको अपना बना बैठा हूँ ।।
तुझे पाने की आस दिल की बुझती नहीं
अश्क पीकर ही दिल अपना जला बैठा हूँ ।।

परेशां रात है सुकून क्यूं नहीं मिलता
तुझे प्यार है अगर तू बेचैन क्यूं नहीं मिलता ।।
बांट लेते थे हम दर्दे गम एक दूसरे का
गम तो यही है अब हमको तेरा वो हौसला नहीं मिलता ।।
झूठ कहते है हमसे बेपनाह मुहब्बत करते है वो
ऐतबार कर भी ले मगर दिल खुशगवार नहीं मिलता ।।
हर सवाल मेरे दिल का कहता है यही हरदम
वो रहबर नहीं होते जिनको दिल नहीं मिलता ।।
तुम्हारे बगैर भी हर लम्हा साथ तुम्हारे चलने लगे
जिन्दगी तेरे सिवा हमको चैन क्यूँ नहीं मिलता ।।

जिन्दगी वही रह गई आया नहीं गया
मोहब्बत ही तेरा हमसे भुलाया नहीं गया ।।
एहसास है दिल में मुझे तुम्हारा हर पल
ख्यालो से तुझको कभी मिटाया नहीं गया ।।
दीवानगी है मुझे कितना तुझसे न पूछो
कोई भी पल तेरे बिन बिताया नहीं गया ।।
उल्फत में जो लम्हा साथ गुजारे ये हमने
वो मंजर कभी आँखों से मिटाया नहीं गया ।।
बेकरारी है इसकदर तुझसे मिलने का मुझे
यही दर्द है जो तुमको कभी समझाया नहीं गया ।।

प्यार में गर अपने बेवफा हम न होंगे
सच्चे प्यार के किस्से हमारे भी होंगे ।।
दम ही निकल जाये गर दीवानगी में अपनी
दुनियाँ में हर तरफ दीवाने हमारे ही होंगे ।।
उल्फत में गर मर मिटे हम एक दूसरे के लिये
मोहब्बत के तराने इक दिन हमारे भी होंगे ।।
दास्तां ये इकदिन हकीकत ही बन जाये
हर आशिकी में फंसाने हमारे भी होंगे ।।
गर वफा की राह में हमसफर हम न बन सके
दिल में बोहत दर्द होगा आँख में आँसू भी होंगे ।।

कुछ तो कहो ख्यालों में जो आये हो
क्यूँ रातो से तुम खफा हो गये हो ।।
मंजिल की राहो में ख्वाहिशों को जगह दो
क्यूँ उम्मीदो में फासले बना गये हो ।।
साथ हमारे जो गुजारनी थी जिन्दगी
तमन्ना ये दिल की क्यूँ भुला गये हो ।।
कहते थे वजूद कभी हमको तुम अपना
फिर क्यूँ हमसे तुम जुदा हो गये हो ।।
तुझे देखने की हसरते है मुद्दतों से हमें
तस्वीर जो दिल में अपनी बना गये हो ।।

तुझे तो ये गम है कि वक्त तुझे तन्हा न कर जाये
मैं तो मर भी न सकूं गर तेरे बिन जिन्दगी ठहर जाये ।।
गुजरे हुये वक्त को तुमने देखा ही नहीं रुककर
सम्हल्ते नहीं और सोचते हो मंजिल मिल जाये ।।
कहना ही आसान है मुहब्बत निभाना है मुश्किल
कुछ ऐसा तो करो चाहत पे यकीन होजाये ।।
अब ये मुमकिन नहीं कि इतना इंतेजार करे कोई
तुम कोई कारनामा कर दो कि जिन्दगी बदल जाये ।।
मुहब्बत ने दिये हैं जो दर्द हमारी तकदीर में
वक्त करे तू मिल जाये सारे जख्म ही भर जाये ।।

छोड़कर इस तरहा मुझे तुम जा रहे हो कहाँ
हम तो अकेले हो ही जाएंगे तुझे बेवफा कहेगी दुनियाँ ।।
मरके नहीं तो साथ जीकर उल्फत को निभाओ
वरना तेरे इस करम पे तुझे जालिम कहेगी दुनिया ।।
बचपन गया खेल में जवानी भी गुजर जाएगी
उम्मीदों में चाहत की शम्मा कब तक जलाएगी दुनियाँ ।।
मेरी मुहब्बत को फासलो का मुकाम तुम न देना
वरना तुझे हर हालात पर रूसवा करेगी दुनिया ।।
गर जिन्दगी बिन तेरे खत्म हो जाये कहीं
इश्क के इस अंजाम पर तुझे कातिल कहेगी दुनियाँ ।।

लूटकर प्यार मेरा हसरतो को आबाद कर गया
छोड़कर बीच राहो में मुझे बरबाद कर गया ।।
दुश्मन भी न हो यार किसी का इस कदर
वो किसी के हो गये हमको दीवाना कर गया ।।
उनकी हंसी में फितरत हमें इस कदर नजर आयी
हमको इश्क में धोखा दिया खुद से वफा कर गया ।।
इतना तो वफा कर गये कहा प्यार नहीं है हमसे
उल्फत का ये भरम हमारे दिल से दफा कर गया ।।
हम जो नाउम्मीद हुये उनकी फितरत से इस कदर
फिर कभी न मिलेंगे कहकर हमको जुदा करगया ।।
उनको हमसे न थी मुहब्बत वो जब हुये किसी के
मगर दिल से जुदा न हो सके इतना रहम कर गया ।।

तुम जो नहीं आये मुद्दतो से आशियाने को
तन्हाईयाँ क्या कम थी गम भी आये जलाने को ।।
छुपकर तेरे ठिकाने पर हम मिलने क्या चले आये
तेरी गलियों में और पहरे पड़े खबर जो हुई जमाने को ।।
सुकून ही नहीं मिलता हमको अब जीने में
हम करते है जिनसे मुहब्बत वहीं लगे सताने को ।।
अब एक ही नशा है हमको होकर तुमसे जुदा
तेरी आँखे जो आती याद हम जाते है मैखाने को ।।
तुमसे जुदाई का डर बरस रहा है इस कदर
कोई हौसला ही मिलता हमे कैसे आऊं समझाने को ।।

बंदिशो में दायरो ने हमको जीना सिखा दिया ।।
तमन्ना तेरी मुहब्बत में जो साथ जीने का है हमें
हमको तेरे प्यार ने उम्मीदो का जहर पिला दिया ।।
आशियाने सारे बिखर गये उल्फत में हमारे
वक्त ने बेवक्त उनसे ख्वाबो में मिलना सिखा दिया ।।
जख्म जितने खाये हमने आशिकी में हमारे
राहे वफा ने दर्द में भी दर्द सहना सिखा दिया ।।
गर्दिशों में वो हमारे ख्यालों में आने लगे
दीवानगी ने फासलो में हमें साथ चलना सिखा दिया ।।

लिखो ना एक खत तुमसे प्यार कर लिया हमने
मेरे कमसिन मुहब्बत पे ऐतबार कर लिया तुमने ।।
मुहब्बत की राहो में ही मिलते है कांटे बोहत
मगर मुझसे मिलना फिर भी इकरार कर लिया तुमने ।।
गर्दिशों में ढूंढ रहा हूँ जरूरत है मुझे तुम्हारी
आया हूँ तेरे शहर में कल रात जो पुकारा तुमने ।।
तन्हाई में इक शम्मा अब रौशन हो गई दिल में
सांसो में हमको बसाना जब तय कर लिया तुमने ।।
पलके बिछाये बैठे रहे उल्फत की राहो में
सफर में साथ होकर मंजिल आसान कर दिया तुमने ।।

उनकी याद ख्यालो में हमको ऐसे सताते है
मुहब्बत में रुख्सतो के कई सवाल उठाते है ।।
कही तो फिर मिलोगे तुम मेरे दिल के करीब हो
साथ जीने का हौसला हम दिल में हरदम जगाते है ।।
जिस दिन से तुम जुदा हुये जिन्दगी से हमारे
हर रोज तुम्हारे उल्फत की दिल में इक शम्मा जलाते है ।।
जब तुम्हारा साथ था कितनी बेखबर थी जिन्दगी
अब जमाने की नजर हम पर कांटों से बरसते है ।।
जुदा होकर भी राहो में साथ मेरे तुम रहते हो
तुम साथ चलते हो मंजिल आसान हो जाते है ।।

गर वफा वो न कर सका मुझे ही निभाना है
उम्र भी कट जाएगी फिर कब्र ही ठिकाना है
वो नहीं आयेंगे होगा एहसास उनको न रुबरू का
अब उनके ख्यालों से ही अपना दिल बहलाना है ।।
जज्बात मुझसे कहती है भूल जा उनका सितम
कम से कम याद तो आते है यही दिल को समझाना है ।।
एक जमाना गुजर गया ये भी गुजर जायेगा
करार जो किया था हमने उम्र भर निभाना है ।।
दिल जो कहता है वो राज नहीं हकीकत है
उनका एहसास ही है जिन्दगी बाकी सब बहाना है ।।

मुहब्बत की शम्मा है दिल में जज्बात मिटाया नहीं जाता
जुनून उनकी चाहतो का हमसे भुलाया नहीं जाता ।।
इश्क की बाते करना और शर्मसार हो जाना
उनके होठों का मुस्कुराना हमसे भुलाया नहीं जाता ।।
उनके आश्रा होकर कभी दामन में सर झुकाना
और उनकी उंगलियों का पहल हमसे भुलाया नहीं जाता ।।
दिन तो ढल गया रात कभी गुजरती नहीं
साथ उनके मुलाकातो का सिलसिला भुलाया नहीं जाता ।।
कभी आँखों ही आँखों में सुबह से शाम ढली
अब कोई भी लम्हा उनका हसरतों से मिटाया नहीं जाता ।।

जुदा होके भी वो मेरे दिल से क्यूँ नहीं जाता
दिल क्यूँ इतना तड़पाता है समझ नहीं आता ।।
रोज ही मिलते है वो हमको ख्यालो में
रात फिर कटती नहीं क्यूँ समझ नहीं आता
मिलने की ख्वाहिश है बोहत दोनों ही में मगर
ये सिलसिला कैसे शुरू हो क्यूँ समझ नहीं आता ।।
जिन्दगी साथ उनके रंजिशों में ही कटती रही
फिर भी उन्ही पर मरता हूँ क्यूं समझ नहीं आता ।।
डर है किसी बात पर फिर रूठ न जाये वो
कैसे उन्हे मनाऊँगा क्यूं समझ नहीं आता ।।
ये दुरियाँ कैसे खत्म होगी हमारे दरमयां
नजदीकियाँ कैसे होगी शुरू क्यूँ समझ नहीं आता ।।

जिनकी राहो पे होती है नजर
मंजिल उनकी बोहत दूर होती है
हमने दिलरुबा से मिलायी है नजर
जो दिल के करीब होता है

इतना बेचैन हूँ तेरी याद में
नींद भी नहीं आती हमको
मुहब्बत के मामलो में साथ
जब तू शरीक होती है

दिल पर काबू नहीं होता
धड़कने तेज होती है
जिन्दगी जब तू हसरतो में
दिल के करीब होती है

तुम्हारे जज्बात में आकर अपने
दीवान का नाम रखा है रुख्सत
वो हजार हो हमसे खफा मगर
ख्यालो में हमको ही नसीब होते है

तुम्हारा रूठना जायज है मगर
कमबख्त ये पागलपन गुनाह नहीं
ये गुलशन तुम्ही ने दिया है
जिसमें मोहब्बत बेशुमार होती है

तेरे बगैर दुनियाँ में हमको
जीना भी गवांरा नहीं
जिन्दगी चलती है जब मेरे
सांसों में तू होती है

तेरे ख्याल में रात भर
जो आँसू आँखों से ढलते है
इक ख्वाब में तेरे आ जाने से
फिर भी कुछ कम होती है

रोज अधूरी मुलाकातों से
हमारा दिल नहीं भरता
सिलसिला रोज निभाने का
ख्वाबो में तुमसे इल्तजा होती है

दिल की गहराईयों में
जब तुझे महसूस करता हूँ
जिस्म में तेरे आने का
धड़कनो में पहल होती है

लाख पहरे है अपनी
मोहब्बत में बैगानो का
तेरे प्यार का फिर भी
बेपनाह बरसात होती है

जब दिल की गलियों से
रोज गुजरती हो तुम
आहटें तेरे कदमों की
रूह को महसूस होती है

तुम पास नहीं हो लेकिन
जब तन्हाई ढूंढती है तुझे
फिजाओ में मेरे करीब
तेरे गेसुओं की महक होती है

यूँ तो पैमानो में हमने
बोहत नजरे देखी है मगर
आँखों से तेरे पीकर ही
ये उम्र जवां होती है

तेरी कोई खता मैंने
जाहिर नहीं किया कभी
तुझसे रंजिशों में मेरी
उल्फत खफा होती है

तेरा कोई गुनाह साबित करना
मेरी फितरत में नहीं
जिन्दगी की हर बाजी से
बेहतर मुहब्बत होती है

जुल्म बस इतना ही करो
प्यार हमारा सलामत रहे
मेहबूब के बगैर जिन्दगी में
मोहब्बत ही कहां होती है

दर्द का मजमा है उस पर
तेरे जाने का गम है
जिन्दगी कम भी हो मगर
संग जीने की तमन्ना होती है

जब कभी ख्यालो में
मैंने मुस्कुराते देखा है तुझे
तेरी खामोश निगाहो में
कोई जिन्दगी की तस्वीर होती है

इश्क में मरने वाले
जिन्दगी से महफूज है मगर
मोहब्बत करने वालो की
हाले जिन्दगी हसीन होती है

जमाना बोहत हसीन है
चाहतो का मजमा है मगर
जिसे मैंने खोया है अभी
उसे पाने की तमन्ना होती है

जो लाजमी न था उसे
तू क्यूं ढूढने आया है अभी
वही था तेरा खुदा जिसकी
तुझे आज जरूरत होती है

मुझसे मिलने तेरा आना
एक हसीन इत्तेफाक है मगर
तुम किसी और की हो
इससे दिल में जलन होती है

करीब आकर मेरे चेहरे पर
जो मायूसी तूने देखी
सामने होकर भी तेरे
गैर होने की तड़प होती है

तेरा इत्तेफाकन मुझसे मिलना
एक हसीन तोहफा तो था मगर
तू गैर था जो मुस्कान मेरे
होठों पर दबी होती है

अपने फुर्कत के सदमे को
तू दिल से मिटाता कैसे
पास आकर ही जताना था
चाहते दिलो में दफन होती है

मुद्दतो बाद तेरा मिलना
खुशनुमा एहसास हुआ जिन्दगी का
कि जिसकी तलाश में था मैं
मेरे तसव्वुर में रोती है

जिस्म ढल जाएगा
जिन्दगी खत्म हो जाएगी
मुहब्बत खाख नहीं होती
इसमें मिलने की लगन होती है

मेरे मर्ज को तुम्हारे
मरहम की जरूरत हो पड़ी
तुम तो आकर चले गये
जख्मो में जलन होती है

मुद्दतो मेरी तन्हाई को तूने
तवज्जो भी नहीं दी मगर
मिलने की चाहते जो दिल में थी तेरे
यही मोहब्बत होती है

तेरा गम तेरी जुबां से सुनना
दिल को कही खलकता है
दर्द दिल में होता है
शिकन चेहरे पे होती है

हकीकत को छोड़कर
झूठी दुनिया जो दिखाते हो
जख्म दिल का छुपता नहीं
चेहरा उसका कफन होती है

मैं उस ठिकाने के पास हूँ
जो तुमको करीब लाती है
आशियाने टूट जाते है मगर
हसरते जिंदा होती है

मेरे प्यार की शम्मा बुझाकर
खुश रहने की तमन्ना है तुझे
वो बादल जरूर आएगा
जो बेवफाई का दामन भिगोती है

हिन्दोस्तान की एकता राष्ट्रीय गीत शब्दावली है
टैगोर है हम सबके हम सबकी गीतांजली है

देश के वीर है हम देश के जवान है
मर मिटेंगे जिसके लिए ये भारत महान है
जो भी करना चाहेंगे जग को कर दिखाएंगे
अब नहीं सहेंगे हम ये अपनी रचनावली है

मर मिटेंगे सरहदो में कुछ करके दिखा जाएंगे
मातृभूमि के लिए हम लहू भी बनाएंगे
ठान लिया है दिल में अपने भारत मेरा प्राण है
उपद्रवो से चुप न रहे जो भी उनकी बली है

हिमालय के शीर्ष तक पहुँचेगे यही सार है
आ रही दिलो में अब संघर्ष की पुकार है
छीन क्या सकेगा कोई ये मेरा स्वराज्य है
आने वाले हर जुबां की यही प्रश्नावली है

गाँधी की हर बातो को अब तक हमने मानी है
सुभाष बोस की हर भाषा हमने आज ही ढानी है
कर ली हमने आज प्रतिज्ञा यही हमारी बोली है
खेलेंगे हम देश की खातिर आज खून की होली है

टैगोर है सबके हम सबकी गीतांजली है

“गुरू के चरणो में समर्पित”
कल्पना का सागर भी तुम हो
खुशियों की गागर भी तुम हो
जब आये अश्रु कोई आँखों में
अपनो सा आदर भी तुम हो

भावना के इस भवसागर में
मेरे मन का रखवाला तुम हो
हर बेला में सुख के क्षण में
जीवन का श्रृंगार तुम हो

खुशियों की हर कल्पना में
रंगों की बरसात तुम हो
इंसान के हर दुख पर भारी
जीवन का हर सुख भी तुम हो

जीवन के हर मुश्किल क्षण में
निर्णय का विस्तार तुम हो
निर्बल को बल देता है जो
वो धैर्य रूपी शस्त्र तुम हो

हर दैत्य से इस धरती पर
मानव का उद्धार तुम हो
विपत्तियों में देकर सहारा
जीवन का उपकार तुम हो

माया तुम हो ममता तुम हो
आगे बढ़ने की क्षमता तुम हो
मेरे पावन प्रेमी मन में
मीरा की हर धुन भी तुम हो

जीवन के हर क्षण क्षण में
मेरे मन का साथी तुम हो
ख्यालो के हर आलिंगन में
वंशी में राधा भी तुम हो

मंदिर तुम हो तुम आराधना हो
मेरे जीवन का आधार तुम हो ।

मेरा जन्म 1965 में एक मध्यम व्यावसायिक घराने में मध्य प्रदेश के बिलासपुर शहर में हुआ । इसी शहर से मैंने स्नातक किया, कला और साहित्य में मुझे बचपन से ही रुचि थी, 15 वर्ष की उम्र में मैंने अपने जीवन की पहली दो कविताएँ लिखी "जो मुझे यादो में सताते है" और "तुमने सोचा क्या किस तरहा" जिसे मध्य प्रदेश के रायपुर रेडियो स्टेशन ने आकाशवाणी में प्रसारित किया । ये पल मेरे जीवन की अविस्मरणीय आनंद देने वाली थी और मुझे प्रेरित भी किया मुझे भविष्य में लिखते रहने के लिये जो मैं आज भी लिख रहा हूँ । विषय वस्तु से हटकर कुछ एक रचना मैंने इस अंक में लिखे है जो आपको जरूर पसंद आएगी ।
मेरी रचना आपको कैसी लगी मुझे जरूर लिखे ताकि आप लोगों की प्रेरणा पाकर मैं और भी अच्छी रचनाएं लिख सकूं ।

धन्यवाद ।

असीम मजुमदार
ई-मेल: Ashimmazumdar65@gmail.com
व्हाट्सएप नंबर: 9993194265